आर.एन.आई.पंजीयन क्रं.
CHHHIN/2017/72506

# किलोल

वर्ष 5 अंक 02, फरवरी 2021

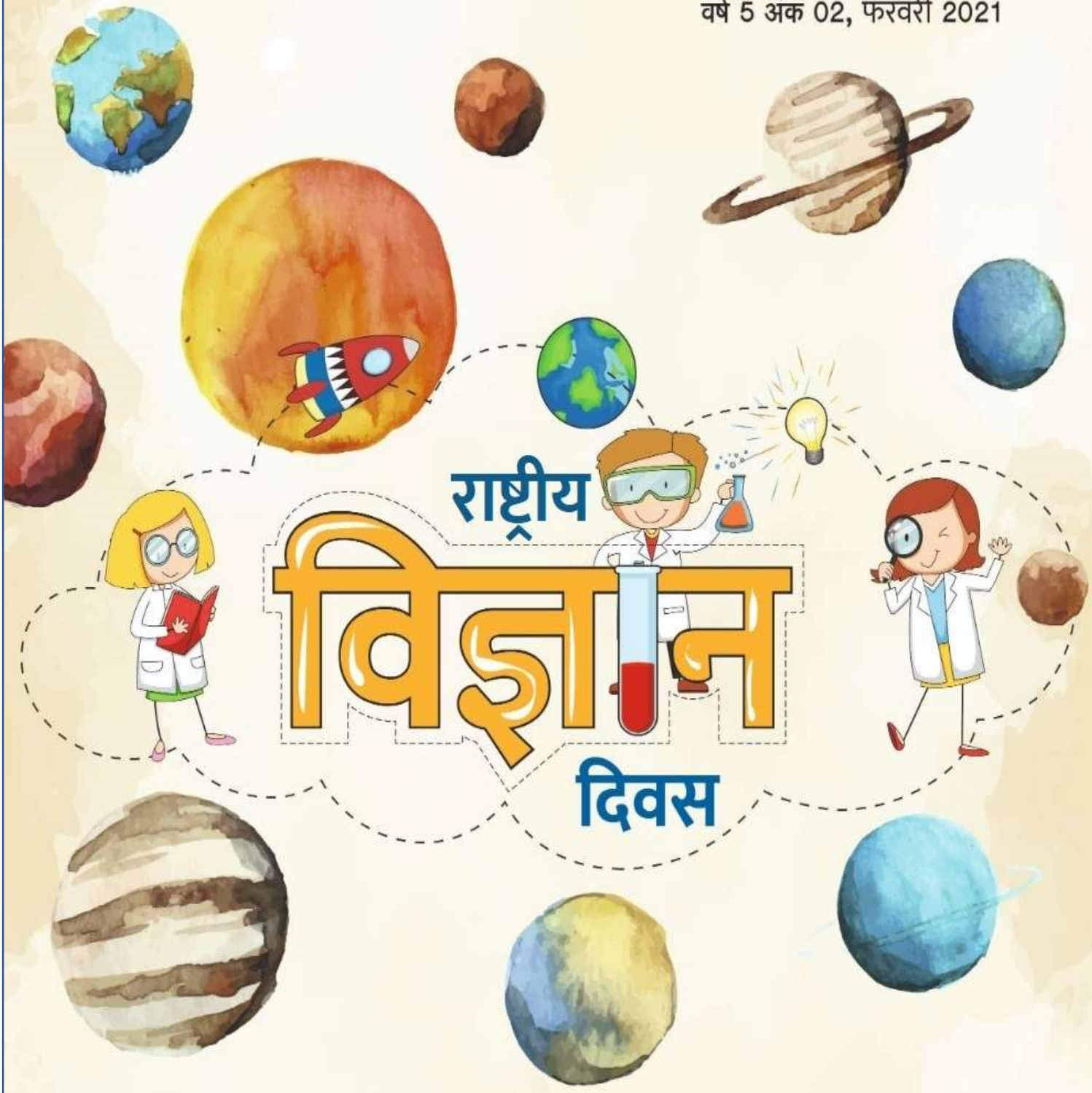

## राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली नं.17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर (छ.ग.) 492007
ई-मेल : wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

# अनुक्रमाणिका


बसंत पंचमी ..... 5

विद्या ..... 6

प्यारी नानी ..... 7

पंचतंत्र की कथाएँ- वाचाल कछुआ ..... 8

भारत बसता है गाँवों में ..... 10

गाय ..... 11

वसुंधरा पुकारती ..... 12

हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि कणाद ..... 14

मोबाईल टावर ..... 18

सर्दी का आनंद उठाओ ..... 20

सैनिक वीर जवान ..... 21

चित्र देख कर कहानी लिखो ..... 23

जिज्ञासा वर्मा, कक्षा नवमीं, शा. क. उ. मा. वि. रतनपुर द्वारा भेजी गई कहानी ..... 24

बन्दर और मगरमच्छ ..... 24

अभिषेक पुरोहित, कक्षा बारहवीं, शा. उ. मा. वि. कोड़ेकुर्से, कान्केर भेजी गई कहानी ..... 25

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी ..... 27

बंदर और मगरमच्छ की मित्रता ..... 27

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी ..... 28

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र ..... 30

अमरूद ..... 31

संकट में भी मुसकाओ जी ..... 32

प्रकृति ..... 33

हमारे प्रेरणास्रोत- डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन ..... 35

शिक्षक ..... 37

नवा साल ..... 39

बढ़ना बच्चों ..... 40

कोहिनूर की आभा ..... 41

सफलता की कहानी- सोड़ी भीमे ..... 42

जंगल में नया साल ..... 45
छेरछेरा तिहार ..... 47
धूप सलोनी ..... 49
सड़क अनुशासन ..... 50
ज्ञान की पाती ..... 52
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस ..... 52
13 फरवरी- विश्व रेडियो दिवस ..... 53
पेड़-पौधे ..... 54
सुरुज ..... 55
उपवन ..... 56
महाराणा प्रताप का परिचय ..... 57
दादी की तरकीब ..... 60
सरस्वती वंदना ..... 63
जाड़े में बरसात ..... 65
हमन सुजान ..... 66
चपलता ..... 67
ठग ..... 70
नव विक्रम संवत्सर ..... 72
पकवान ..... 73
मकर संक्रांति ..... 75
गोदना वाली गेंदा ..... 77
संजीवनी टीका ..... 79
गीत मजे से गाता ..... 81
नेकी करो ..... 82
Near By Tree ..... 84
सुवा गीत ..... 85
बच्चों ने बंजर धरती में आलू-भुट्टे उगाये ..... 87
कुहासा ..... 90
जड़काला ..... 91

करनी का फल ....92
बूढ़ी माँ....94
उड़ी पतंग....95
सोनू की पायल ....97
जीए भारत देश मेरा ....98
गणतंत्र तिहार ....100
नटखट नन्ही....101
जाने कहाँ गये वो दिन....103
हिन्दी ....105
नवाचार ....107
सपने ....110
बेरोजगारी ....112
लकड़हारा....113
ऋतु बसंती....114
कामचोर भिखारी....115
दुनिया ये स्थिर ....116
अधूरी कहानी पूरी करो....117
मोहन की मुश्किल....117
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी....118
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी....119
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी....120
प्रवीण की परेशानी....120
तोता....121
गगन की सैर....122
नए साल में ....123
भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली) ....125

## संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

## सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

## ई-पत्रिका एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चो,

आप सभी को गणतंत्र दिवस की बधाई इस आशीर्वाद के साथ देना चाहता हूँ, कि आप सभी खूब पढ़ें और छत्तीसगढ़ का नाम रोशन करें. इस साल हम सब ये संकल्प लें कि हम प्यार, सद्भावना,और भाईचारे के साथ रहेंगे. अपने माता-पिता, दादा-दादी की हर बात मानेंगे. अपने दादा-दादी को भी किलोल की कहानियाँ सुनाएँ और उनसे भी कुछ किस्से कहानियाँ सुनाने को कहें.

यह शिक्षा सत्र लगभग समाप्ति की ओर है. आपकी परीक्षाएँ भी नजदीक हैं. मुझे आशा है आप सभी पूरी लगन से परीक्षाओं की तैयारी कर रहे होंगे. पढ़ाई के साथ साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें जरूरी सावधानियाँ अपनाने में लापरवाही न करें.

आपका
आलोक शुक्ला

# बसंत पंचमी

रचनाकार-नंदिनी राजपूत

ज्ञान दायिनी, वीणा वादिनी, सरस्वती है माता.
जन्मदिवस पर जिनके बसंत पंचमी पर्व मनाया जाता..

सर-सर पवन सरकती जाए, भर-भर भँवरे गुनगुनाएँ.
फूलों का रस चूसने को, रंग-बिरंगी तितलियाँ मंडराएँ..

खेत-खलिहानों में हरियाली छाई, सोना-सा सरसों लहराई.
जौ और गेहूँ की बालियाँ देखो, प्रकृति में अद्भुत छटा बिखराई..

आमों में बौर छा जाए, खुशबू जिसका मन महकाएँ.
पीले वस्त्र धारण करके, जन-जन बसंत पंचमी मनाएँ..

आओ, बसंत पंचमी ऐसे मनाएँ, मिल-जुलकर सब शपथ उठाएँ.
नि:शुल्क शिक्षा प्रणाली को, बच्चों के घर-घर तक पहुँचाएँ..

# विद्या

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

जग में विद्यार्थी बनो, जब पाना हो ज्ञान.
विद्या से ही जग सदा, होता परम महान..

सदा समर्पण जो करे, पावन रख मनोभाव.
विद्या की पाकर कृपा, पा गुरुवर की छाँव..

निर्माता हैं राष्ट्र के, भावी यही सपूत.
विद्यार्थी बन जो करे,विद्या प्राप्त अकूत..

विद्या अध्ययन करके, नित्य बढ़ाए ज्ञान.
गुरुपद पाते हैं वही, जो त्यागें अभिमान..

कोहिनूर करता रहा, निज गुरुजन का मान.
तब ही जीवन में मिला, पावन विद्या ज्ञान..

# प्यारी नानी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

गुस्सा छोड़ो प्यारी नानी
कहो न तुम कथा-कहानी
मेघ कहाँ से लाता होगा
भर-भर कर इतना पानी.

चंदा मामा दूर-दूर क्यों
हमदम हमसे रहते हैं
आसमान से सूरज दादा
आकर क्यों वह तपते हैं.

हमको तुम बतलाओ नानी
कलियाँ कैसे खिल आतीं
और बाग में तितली रानी
आकर क्यों रस पी जाती.

बोलो-बोलो, बोलो नानी
सागर जल क्यों है खारा
बादल भैया जाने क्यों
दे जाता है पानी सारा.

# पंचतंत्र की कथाएँ- वाचाल कछुआ

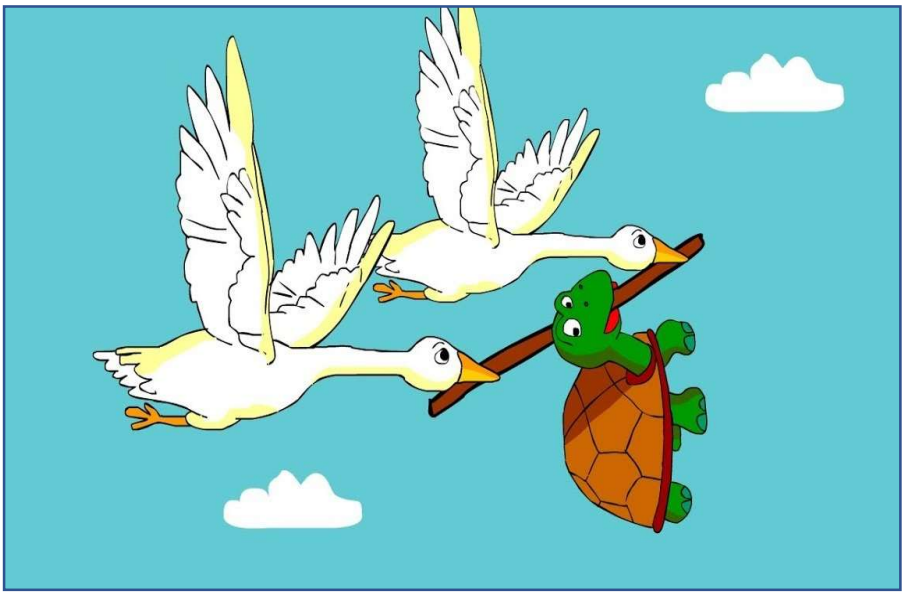

एक तालाब में कंबुग्रीव नामक एक कछुआ रहता था. वह बुद्धिमान तो था पर बातें बहुत करता था. कोई भी विचार उसके मन में आए तो वह बिना बोले नहीं रह सकता था. उसी तालाब के किनारे संकट और विकट नाम के दो हंस भी रहते थे. दीर्घकाल से साथ-साथ रहने के कारण उनमें गहरी मित्रता हो गई थी. विश्राम के समय वे आपस में वार्तालाप करते थे. ऐसे ही उनके दिन आनंद से बीत रहे थे.

एक बार वर्षा ऋतु में ठीक से वर्षा नहीं हुई. तालाब का सीमित जल धीरे-धीरे सूखने लगा. संकट और विकट को चिंता होने लगी. उन्हें आने वाले दिनों की कल्पना भयभीत करने लगी. उन्हें चिंतित देख कंबुग्रीव ने कहा, "मित्रो! विपत्ति आने पर धैर्य के साथ उसके निवारण के उपायों पर विचार करना उचित होता है. आप दोनों किसी एक सरोवर का पता लगाएँ जहाँ पर्याप्त जलराशि हो. हम वहां चले जाएंगे."

दोनों हंसों को कंबुग्रीव की बात अच्छी लगी. उन्होंने शीघ्र ही एक विशाल जलाशय का पता लगा लिया. परन्तु वह जलाशय तालाब से कई कोस दूर था. यह एक नई समस्या थी. कंबुग्रीव वहाँ तक चल कर नहीं जा सकता था. वह इतना बड़ा और भारी था कि संकट और विकट उसे अपनी पीठ पर बैठाकर उड़ नहीं सकते थे. विकट ने बहुत सोच कर एक प्रस्ताव रखा. उसने कहा, "मित्र कंबुग्रीव! मैं और संकट एक टहनी को अपनी चोंच में दबा लेंगे. आप उसे अपने मुँह से बलपूर्वक पकड़ लेना. फिर हम उस जलाशय की ओर आपको साथ लिए उड़ चलेंगे."

"हाँ, यह उपाय अच्छा है. किंतु मित्र! किसी भी दशा में आप अपना मुँह ना खोलें, यह अत्यंत आवश्यक है." संकट ने कंबुग्रीव को समझाते हुए कहा.

कंबुग्रीव ने हंसकर कहा, "क्या आप दोनों को लगता है कि मैं ऐसी मूर्खता करूंगा?"

इस युक्ति के अनुसार संकट और विकट कंबुग्रीव को अपने साथ ले उड़े. बड़ा ही अद्भुत और अभूतपूर्व दृश्य था. जब वे एक गाँव के ऊपर से उड़ रहे थे. तभी एक बालक की दृष्टि उन पर पड़ी वह बड़ा अचंभित हुआ. "देखो-देखो" ऐसा चिल्लाते हुए हंस के उड़ने की दिशा में दौड़ पड़ा. धीरे-धीरे अन्य लोग भी कौतूहलवश उसके पीछे दौड़ने लगे.

इससे कंबुग्रीव को हंसी आने लगी. वह सोचने लगा, मनुष्य नामक यह प्राणी भी कितना मूर्ख है. धीरे-धीरे कोलाहल बढ़ता हुआ देख उससे रहा न गया. वह बोल पड़ा "चुप हो जाओ मूर्खो....

पर यह क्या? जैसे ही उसने अपना मुँह खोला, टहनी उसके मुँह से छूट गयी और वह जमीन की तरफ गिरने लगा. पर अब तो कुछ भी नहीं हो सकता था. जमीन पर गिरते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गए.

यह देख संकट और विकट का हृदय विषाद से भर गया.

संकट ने कहा, "आह! बुद्धिमान भी यदि अपनी चंचलता पर नियंत्रण न रखे तो अनर्थ को रोका नहीं जा सकता.

# भारत बसता है गाँवों में

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

भारत बसता है गाँवों में,
जहाँ होता है अपनेपन का एहसास.
परम्परा, संस्कृति है जीवित यहीं,
मिट्टी की सौंधी ख़ुशबू है ख़ास.
किस्से कहानियाँ मन को भिगोये,
अनुपम है दादा दादी का प्यार.
रसोई से आती खाने की महक,
माँ का आँचल ज्यों शीतल बयार.
स्नेह, ममता, वात्सल्य झलकता,
सुक़ून देती पीपल की छाँव.
चौपाल बढ़ाती शोभा गाँव की,
वहीं मिले मेरे एहसासों को ठाँव.

# गाय

रचनाकार- अजय कुमार यादव

कितनी सुंदर है कितनी प्यारी
काली लाल सफेद गाय हमारी.
घास चरने जाने की है तैयारी
"लाली "नाम की है गाय हमारी..

बछड़ा है इसका मोटा तगड़ा
करता रहता है सबसे झगड़ा.
हम सबका है वह लाडला,
गोलू नाम का है मेरा बछड़ा.

पापा कहते और मम्मी भी कहे,
गौ सेवा करने से पुण्य है मिले.
दूध होता है अमृत के समान
गौमाता का हम करे सम्मान.

देवी देवता बसते तैंतीस करोड़
सेवा कर जीवन का उद्धार करो.
भगवान ने सेवा की है जिसकी
उसका आप भी सम्मान करो.

# वसुंधरा पुकारती

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

वसुंधरा पुकारती,
अब मानव जाग जाओ,
वसुंधरा पुकारती.
जन्म से मृत्यु तक तुम्हें,
निस्वार्थ भाव से पालती.

वसुंधरा पुकारती,
अब मानव जाग जाओ,
वसुंधरा पुकारती.
मार्गदर्शन करती है और,
सदा ही तुमको सुधारती.

वसुंधरा पुकारती,
अब मानव जाग जाओ,
वसुंधरा पुकारती.
स्वयं कष्ट सहकर तुम्हारी,
रक्षा करती है और,
अपनी गोद में तुम्हें पालती.

वसुंधरा पुकारती
अब मानव जाग जाओ,
वसुंधरा पुकारती
हरी-भरी वादियाँ अब उजड़ रही हैं,
अनुसंधान के बहाने तन को न छेदो.
वसुंधरा खोखली हो रही है.

वसुंधरा पुकारती,
अब मानव जाग जाओ,
वसुंधरा पुकारती.
बनाए रखना मेरी हरियाली,
देती रहूँगी तुम्हें खुशहाली.
मैं ही तुम्हारी जननी हूँ,
हूँ मैं ही तुम्हारा रक्षक.
क्यों बनते हो बिना समझे,
तुम बेटे ही भक्षक.

मेरे साथ व्यवहार करो सब अच्छा,
वसुंधरा अब तुम्हें गुहारती.
वसुंधरा पुकारती.
अब मानव जाग जाओ
वसुंधरा पुकारती

# हमारे पौराणिक पात्र- महर्षि कणाद

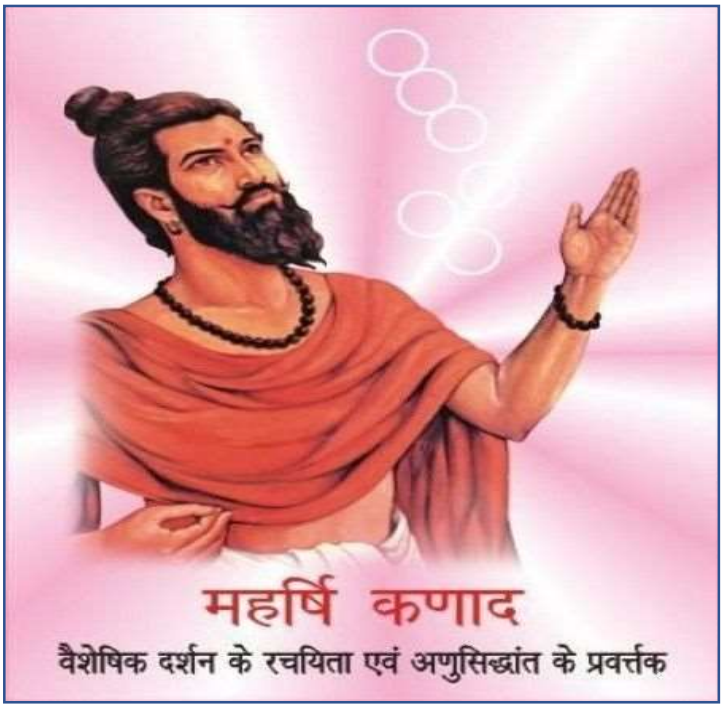


वेगः निमित्तविशेषात कर्मणो जायते.
वेगः निमित्तापेक्षात कर्मणो जायते.
नियतदिक क्रियाप्रबन्धहेतु.
वेगः संयोगविशेषविरोधी..
-वैशेषिक दर्शन

अर्थात् : वेग पांचों द्रव्यों पर निमित्त व विशेष कर्म के कारण उत्पन्न होता है तथा नियमित दिशा में क्रिया होने के कारण संयोग विशेष से नष्ट होता है या उत्पन्न होता है. उपरोक्त संस्कृत सूत्र न्यूटन के 913 वर्ष पूर्व अर्थात ईसा से 600 वर्ष पूर्व लिखा गया था. न्यूटन के गति के नियमों की खोज से बहुत पहले भारतीय वैज्ञानिक और दार्शनिक महर्षि कणाद ने यह सूत्र 'वैशेषिक सूत्र'में लिखा था, जो शक्ति और गति के बीच संबंध का वर्णन करता है.

कणाद गुजरात के प्रभास क्षेत्र (द्वारका के निकट) में जन्मे थे. महर्षि कणाद ईसा से 600 वर्ष पूर्व हुए थे अर्थात बुद्ध और महावीर के काल में.उनके जीवन के बारे में ज्यादा बातें न करते हुए हम उनके द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक सिद्धांतों के विषय में जानने का प्रयास करेंगे.

महर्षि कणाद ने परमाणु को ही अंतिम तत्व माना. कहते हैं कि जीवन के अंत में उनके शिष्यों ने उनकी अंतिम अवस्था में प्रार्थना की कि कम से कम इस समय तो परमात्मा का नाम लें, तो कणाद ऋषि के मुख से निकला पीलव:, पीलव:, पीलव: अर्थात परमाणु, परमाणु, परमाणु.

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व ब्रह्माण्ड का विश्लेषण परमाणु विज्ञान की दृष्टि से सर्वप्रथम एक शास्त्र के रूप में सूत्रबद्ध ढंग से महर्षि कणाद ने अपने वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित किया था.

महर्षि कणाद वैशेषिक सूत्र के निर्माता, परंपरा से प्रचलित वैशेषिक सिद्धांतों के क्रमबद्ध संग्रहकर्ता एवं वैशेषिक दर्शन के उद्धारकर्ता माने जाते हैं. वे उलूक, काश्यप, पैलुक आदि नामों से भी प्रख्यात थे.

भौतिक जगत की उत्पत्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण परमाणुओं के संघनन से होती है- इस सिद्धांत के जनक भी महर्षि कणाद थे. महर्षि कणाद का जन्म चरक और पतंजलि से पूर्व हुआ था.

कणाद के अनुसार पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, दिक्, काल, मन और आत्मा इन्हें जानना चाहिए. इस परिधि में जड़-चेतन सारी प्रकृति व जीव आ जाते हैं. कणाद ने परमाणुओं को तत्वों की ऐसी लघुतम अविभाज्य इकाई माना जिनमें इस तत्व के समस्त गुण उपस्थित होते हैं.

कणाद के अनुसार परमाणु स्वतंत्र नहीं रह सकते. एक प्रकार के दो परमाणु संयुक्त होकर 'द्विणुक'का निर्माण कर सकते हैं. यह द्विणुक ही आज के रसायनज्ञों का 'वायनरी मॉलिक्यूल'लगता है. उन्होंने यह भी कहा कि भिन्न-भिन्न पदार्थों के परमाणु भी आपस में संयुक्त हो सकते हैं. वैशेषिक सूत्र में परमाणुओं को सतत गतिशील भी माना गया है तथा द्रव्य के संरक्षण (कन्सर्वेशन ऑफ मैटर) की भी बात कही गई है. ये बातें भी आधुनिक मान्यताओं के संगत हैं.

महर्षि कणाद कहते हैं, द्रव्य को छोटा करते जाएंगे तो एक स्थिति ऐसी आएगी, जहां से उसे और छोटा नहीं किया जा सकता, क्योंकि यदि उससे अधिक छोटा करने का प्रत्यन किया तो उसके मूल गुणों का लोप हो जाएगा. उनके अनुसार द्रव्य की दो स्थितियां हैं- एक आणविक और दूसरी महत्. आणविक स्थिति सूक्ष्मतम है तथा महत् यानी विशाल ब्रह्माण्ड. दूसरे, द्रव्य की स्थिति एक समान नहीं रहती है.

..धर्म विशेष प्रसुदात द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवायनां पदार्थानां साधर्य वैधर्यभ्यां तत्वज्ञाना नि:श्रेयसम:.. -वैशेषिक दर्शन 0-4

अर्थात धर्म विशेष में द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष तथा समवाय के साधर्य और वैधर्म्य के ज्ञान द्वारा उत्पन्न ज्ञान से नि:श्रेयस की प्राप्ति होती है.

द्रव्य क्या है?

पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशं कालोदिगात्मा मन इति द्रव्याणि.. -वै.द. 1/5

अर्थात पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा जीवात्मा तथा मन- ये सभी द्रव्य हैं. यहां पृथ्वी, जल आदि से कोई हमारी पृथ्वी, जल आदि का अर्थ लेते हैं. पर ध्यान रखें इस संपूर्ण ब्रह्मांड में ये 9 द्रव्य कहे गए, अत: स्थूल पृथ्वी से यहां अर्थ नहीं है. इसका अर्थ जड़ से है. जड़ जगत ब्रह्मांड में सभी जगह है. इसे आज का विज्ञान ठोस पदार्थ कहता है.

पृथ्वी यानी द्रव्य का ठोस (Solid) रूप, जल यानी द्रव्य का तरल (Liquid) रूप तथा वायु अर्थात द्रव्य का एयर (Air) रूप, यह तो सामान्यत: दुनिया में पहले से ज्ञात था. पर महर्षि कणाद कहते हैं कि तेज भी द्रव्य है जबकि पदार्थ व ऊर्जा एक है, यह ज्ञान 20वीं सदी में आया है. इसके अतिरिक्त वे कहते हैं- आकाश भी द्रव्य है तथा आकाश परमाणुरहित है और सारी गति आकाश के सहारे ही होती है, क्योंकि परमाणु के भ्रमण में हरेक के बीच अवकाश या प्रभाव क्षेत्र रहता है.

महर्षि कणाद कहते हैं- दिक् (Diversion) तथा काल (time) यह भी द्रव्य है, जबकि पश्चिम से इसकी अवधारणा आइंस्टीन के सापेक्षतावाद के प्रतिपादन के बाद आई.

'नित्यं परिमण्डलम्'.- वै.द. 7/20

अर्थात : परमाणु छोटे-बड़े रहते हैं, इस विषय में महर्षि कणाद कहते हैं-

एतेन दीर्घत्वह्रस्वत्वे व्याख्याते (वै.द.) 7-1-17

अर्थात : आकर्षण-विकर्षण से अणुओं में छोटापन और बड़ापन उत्पन्न होता है.

इसी प्रकार ब्रह्मसूत्र में कहा गया-

महद् दीर्घवद्वा ह्रस्वपरिमण्डलाभ्याम् (व्र.सूत्र 2-2-11)

अर्थात महद् से ह्रस्व तथा दीर्घ परिमंडल बनते हैं.

परमाणु प्रभावित कैसे होते हैं तो महर्षि कणाद कहते हैं-

विभवान्महानाकाशस्तथा च आत्मा (वै.द. 7-22)

अर्थात् उच्च ऊर्जा, आकाश व आत्मा के प्रभाव से.

परमाणुओं से सृष्टि की प्रक्रिया कैसे होती है? तो महर्षि कणाद कहते हैं कि पाकज क्रिया के द्वारा. इसे पीलुपाक क्रिया भी कहते हैं अर्थात अग्नि या ताप द्वारा परमाणुओं का संयोजन होता है. दो परमाणु मिलकर द्वयणुक बनते हैं. तीन द्वयणुक से एक त्रयणुक, चार त्रयणुक से एक चतुर्णुक तथा इस प्रकार स्थूल पदार्थों निर्मित होते जाते हैं. वे कुछ समय रहते हैं तथा बाद में पुन: उनका क्षरण होता है और मूल रूप में लौटते हैं. हमारे शरीर और इस ब्रह्मांड की रचना इसी तरह हुई है.

महर्षि कणाद यद्यपि आज से लगभग 2600 वर्ष पहले हुए थे पर उनके द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में किए गए कार्यों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा.

# मोबाईल टावर

रचनाकार- रजनी शर्मा 'बस्तरिया'

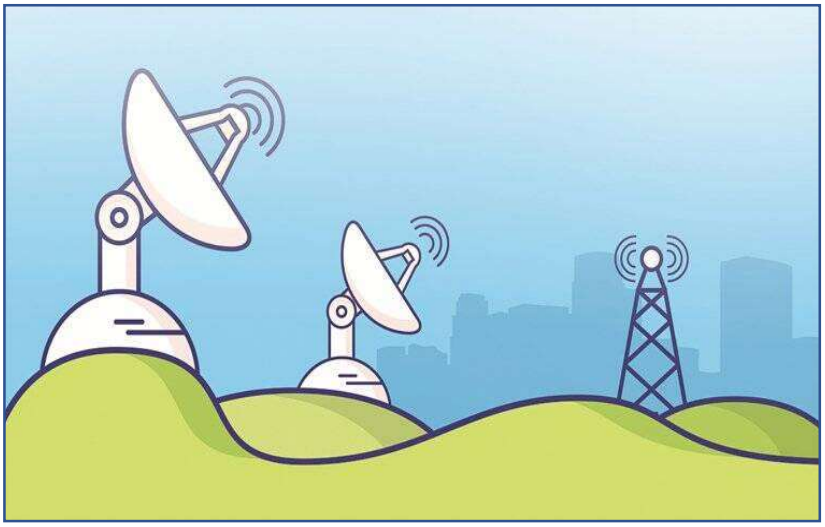

मोबाईल टावर ओ मोबाईल टावर,
खड़े हो तुम लेकर कितना पावर?
हजारों वाट का करेंट रोज खाकर,
देते हो सिगनल सबको तब जाकर.

नहीं तुम्हारे पास है कोई भी वाकर,
फिर भी छू लेते हो क्यों बनकर शाकर?

रेडियो तरंगें दौड़े सरपट तुम्हारे ही भीतर,
चुम्बकीय किरणें कितना फैलाते हो बाहर.

पर हम दुर्लभ तितलियाँ करती हैं गुहार,
रुको, ना करो अब हमारे अस्तित्व पर प्रहार.

खोजती हैं हम ही दुर्लभ वनस्पतिके प्रकार,
इनसे होते हैं ठीक हजार मानवों के विकार.

आधुनिकता के दौड़ पर कीजिए जरा विचार,
हम तितलियों का ना हो अब जीवन संहार.

रेडियो तरंगें करती हैं हम लाचारों का शिकार,
उजड़ता ही जा रहा है हमारा सुंदर संसार.

छत्तीसगढ़ में पहले होते थे हमारे नाना प्रकार,
चुम्बकीय किरणों से सिमट गया हमारा संसार.

जैव विविधता है पर्यावरण करते सुंदर शृंगार,
संपूर्ण मानव जाति के लिए हम हैं उपहार..

# सर्दी का आनंद उठाओ

रचनाकार- श्लेष चन्द्राकर

खेलो-कूदो धूम मचाओ.
सर्दी का आनंद उठाओ..

कष्ट तनिक बच्चों तुम सह लो.
नित्य सवेरे उठकर टहलो..
चंगा रहने की हो हसरत.
करो नियम से योगा-कसरत..

निज तन को बलवान बनाओ.
सर्दी का आनंद उठाओ..

पालक-मेथी,मटर-टमाटर.
मूली-बैंगन, गोभी-गाजर..
भगाओ ठिठुरन जकड़न.
मुँह से भाप निकाल दिखाओ..

खेलो-कूदो धूम मचाओ.
सर्दी का आनंद उठाओ..

# सैनिक वीर जवान

रचनाकार- श्यामसुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

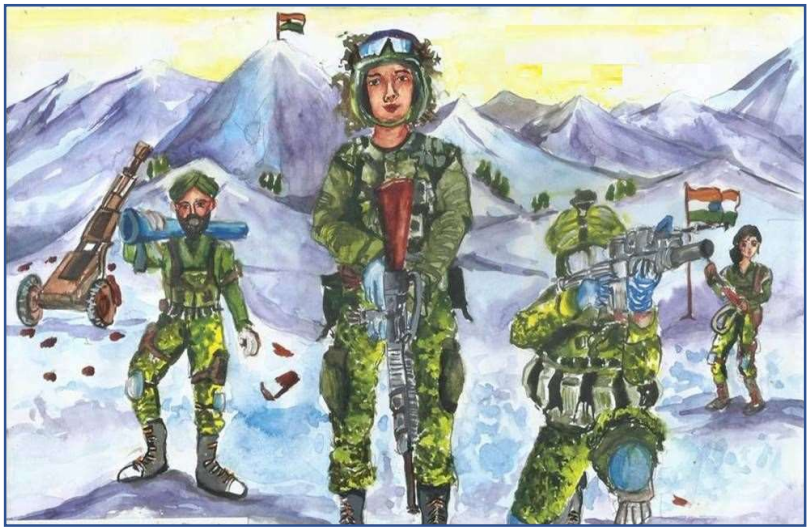

भारत अपना गौरवशाली, भारत देश महान.
जिसकी रक्षा करती सेना, सैनिक वीर जवान.

इस पावन धरती पर जब-जब, शत्रु कभी घुस आया.
टूट पड़े थल सेना सैनिक, उसको मार भगाया.
शान नहीं जाने दी अपनी, भले गवाँ दी जान.
भारत अपना गौरवशाली, भारत देश महान..

सागर तट से कभी शत्रु ने, मुँह भारत को मोड़ा.
थल सेना के वीर सैनिकों, ने मुँह उनका तोड़ा.
कभी न झुकने दिया तिरंगा, सदा बढ़ाई शान.
भारत अपना गौरवशाली, भारत देश महान..

वायु मार्ग से दुश्मन ने जब, थी घुसने की ठानी.
टूट पड़े दुश्मन के ऊपर, वायु सैन्य सेनानी.
भारत के गौरव हैं सैनिक, हम करते सम्मान.
भारत अपना गौरवशाली, भारत देश महान..

करती हैं सेनाएँ तीनों, सदा देश की रक्षा.
इनसे ही है सीमाओं की, चारों ओर सुरक्षा.
सेनाएँ हैं अपना गौरव, हम करते गुणगान.
भारत अपना गौरवशाली, भारत देश महान..

# चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

## जिज्ञासा वर्मा, कक्षा नवमीं, शा. क. उ. मा. वि. रतनपुर द्वारा भेजी गई कहानी

### बन्दर और मगरमच्छ

नदी के किनारे जामुन के पेड़ पर एक बन्दर रहता था. उस पेड़ पर बहुत मीठे-मीठे जामुन फलते थे.एक दिन एक मगरमच्छ पेड़ के पास आया. पेड़ पर बैठे बन्दर ने उससे आने की वजह पूछी तो मगरमच्छ ने बताया कि वह खाने की तलाश में घूम रहा है. बन्दर ने मगरमच्छ को बताया कि इस पेड़ के जामुन बहुत ही मीठे हैं और उसने मगरमछ को जामुन दिए.अब बंदर और मगरमच्छ की मित्रता हो गयी. बन्दर, मगरमच्छ को रोज़ खाने के लिए जामुन देता था.

एक दिन मगरमच्छ ने अपनी पत्नी को भी जामुन खिलाये. स्वादिष्ट जामुन खाने के बाद मगरमच्छ की पत्नी ने सोचा कि रोज़ ऐसे मीठे फल खाने वाले बंदर का दिल भी खूब मीठा होगा. उसने अपने पति से कहा कि उसे उस बन्दर का दिल चाहिए और वो ज़िद पर अड़ गई.

पत्नी की ज़िद से मजबूर मगरमच्छ ने एक चाल चली और बन्दर से कहा कि उसकी भाभी उससे मिलना चाहती है. बन्दर ने कहा कि वो नदी में कैसे जायेगा? मगरमच्छ ने उपाय सुझाया कि बंदर उसकी पीठ पर बैठ जाए और उसके घर चले.

बन्दर अपने मित्र की बात का भरोसा कर, पेड़ से कूदकर मगरमच्छ की पीठ पर सवार हो गया. जब वे नदी के बीचों-बीच पहुँचे तब मगरमच्छ ने सोचा कि अब बन्दर को सही बात बताने में कोई हानि नहीं और उसने भेद खोल दिया कि उसकी पत्नी बंदर का दिल खाना चाहती है. बन्दर का दिल टूट गया, लेकिन उसने अपना धैर्य नहीं खोया.

बन्दर मगरमच्छ से बोला “ओह मेरे मित्र तुमने, यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बताई. मैंने तो अपना दिल जामुन के पेड़ में सम्भाल कर रखा है. तुम मुझे वापस नदी के किनारे ले चलो ताकि मैं अपना दिल लाकर अपनी भाभी को उपहार में देकर उसे खुश कर सकूँ.”

मगरमच्छ वापस लौटा और बन्दर को जैसे ही नदी-किनारे ले कर आया बन्दर ने जामुन के पेड़ पर छलाँग लगाई और क्रोधपुर्वक बोला, “मूर्ख, दिल के बिना भी क्या कोई ज़िन्दा रह सकता है? जा, आज से तेरी-मेरी दोस्ती समाप्त.”

# अभिषेक पुरोहित, कक्षा बारहवीं, शा. उ. मा. वि. कोड़ेकुर्से, कान्केर भेजी गई कहानी

एक घने जंगल के बीच एक विशाल नदी थी. उस नदी में एक बूढ़ा मगरमच्छ रहता था बूढ़ा होने के कारण वह शिकार नहीं कर पाता था. एक दिन वह भूखा, थका-हारा नदी किनारे जामुन के पेड़ के नीचे लेटा था. उस पेड़ पर एक बंदर बैठा जामुन खा रहा था.

मगरमच्छ ने बंदर से पूछा, तुम क्या खा रहे हो? मुझे भी कुछ खाने को दे दो बहुत भूख लगी है भाई. बंदर बोला ये जामुन है बहुत मीठे हैं तुम भी खाओ. मगरमच्छ बोला अरे, यह तो सच में बहुत मीठे हैं. शुक्रिया बंदर भाई मुझे बहुत भूख लगी थी और तुमने मेरी मदद की तुम बहुत अच्छे हो. मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम जैसे मेरा कोई दोस्त हो. बंदर बोला हाँ क्यों नहीं आज से तुम मेरे दोस्त हो.

अब मगरमच्छ रोज जामुन के पेड़ के पास आता और बंदर रोज उसे जामुन देता और दोनों खूब बातें भी करते. मगरमच्छ अपनी पत्नी के लिए भी जामुन ले जाता था. एक दिन मगरमच्छ की पत्नी ने कहा कब तक यह जामुन खा खा कर गुजारा करोगे? सोचो यह जामुन इतने मीठे हैं तो वह बंदर तो रोज जामुन खाता हैं तो सोचो उसका मांस कितना स्वादिष्ट होगा? और हमने बहुत दिनों से मांस का स्वाद भी नहीं चखा है. तुम अपने दोस्त का दिल लाकर मुझे दो ना.

पत्नी की बात सुनकर मगरमच्छ सोच में पड़ गया. मैं यह कैसे कर सकता हूँ बंदर मेरा दोस्त है मगरमच्छ बोला. मैं उसके साथ कैसे धोखा कर सकता हूँ?

मगरमच्छ की पत्नी गुस्से में बोली मुझे कुछ नहीं सुनना मुझे बस बंदर का दिल चाहिए,वरना मैं अपनी जान दे दूँगी. मगरमच्छ अपनी पत्नी की जिद से हार मानकर बंदर के पास पहुँचा और बोला बंदर भाई, तुम्हारे दिए जामुन से खुश होकर तुम्हें मेरी पत्नी ने घर बुलाया है. चलो आज हम सब साथ ही खाना खाएँगे.

बंदर,मगरमच्छ के साथ चल पड़ा. दोनों नदी के बीच पहुँचे तब मगरमच्छ को लगा कि अपनी पत्नी की इच्छा के बारे में बंदर को बता देता हूँ. वह कहने लगा बंदर भाई मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ. मेरी पत्नी तुम्हारा दिल खाना चाहती है.

बंदर ने मगरमच्छ की बात सुनकर तुरन्त बचने के लिए एक तरकीब सोची. बंदर बोला अच्छा ऐसा है पर दोस्त तुमने ये बात पहले क्यों नहीं बताई. हम बंदर अपना दिल पेड़ पर ही संभाल कर रखते हैं. अब मेरा दिल लेने के लिए वापस जाना होगा. मुझे तुम पेड़ के पास ले चलो.

मगरमच्छ बोला, अच्छा ठीक है चलो जाकर तुम्हरा दिल ले आते है. मगरमच्छ वापस पेड़ पर बंदर को ले आया. बंदर जैसे ही पेड़ के पास पहुँचा छलाँग लगाकर पेड़ पर चढ़ गया और मगरमच्छ से बोला अरे बेवकूफ क्या कोई दिल के बिना भी जिंदा रहा सकता है? मैंने तुझे अपना दोस्त समझा, तुम्हारी मदद की और तुम ने मेरी दोस्ती का ये बदला दिया. अब तुम्हे न ही जामुन मिलेगे और न ही दिल.

इस प्रकार बंदर ने समझदारी से अपनी जान बचा ली और मगरमच्छ को अपनी बुरी नीयत के कारण दिल और जामुन दोनों से हाथ धोना पड़ा.

# संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

## बंदर और मगरमच्छ की मित्रता

एक जंगल के बीच विशाल नदी बहती है उस नदी में एक बूढ़ा मगरमच्छ अपनी पत्नी के साथ रहता था.मगरमच्छ.बूढ़ा हो गया था इसलिए अब वह शिकार नहीं कर पाता था.एक दिन भूखा,थका,हारा नदी किनारे जामुन के पेड़ के नीचे बैठा था. उस पेड़ पर बैठा बंदर जामुन खा रहा था, मगरमच्छ की नजर बंदर पर पड़ी उसने पूछा बंदर भाई-तुम क्या खा रहे हो, मुझे भी खाने के लिए कुछ दे दो, मैं बहुत भूखा हूँ. बंदर ने कहा यह जामुन है, बहुत मीठा फल है, लो तुम भी खाओ. मगरमच्छ ने जामुन खाकर कहा- यह तो सचमुच बहुत मीठे हैं. मुझे बहुत भूख लगी थी और तुमने मेरी मदद की, तुम बहुत अच्छे हो मुझे बहुत खुशी होगी अगर तुम मुझसे दोस्ती कर लो. बंदर ने कहा-हाँ क्यों नहीं ? आज से हम दोस्त हैं. अब मगरमच्छ रोज ही उस पेड़ के किनारे आता और बंदर उसे जामुन खिलाता दोनों खूब बातें भी करते. एक दिन बातों बातों में मगरमच्छ ने बंदर को अपनी पत्नी के बारे में बताते हुए कहा कि मेरी पत्नी अकसर बीमार रहती है. भोजन सही समय पर नहीं मिलता. बूढ़े हो जाने के कारण अब हम शिकार भी नहीं कर पाते. मगरमच्छ के बारे में जानकर बंदर बहुत दुखी हुआ और मगरमच्छ से बोला कि तुम अपनी पत्नी को भी साथ ले आया करो, मैं दोनों को खाने के लिए फल दे दिया करूँगा. हम साथ-साथ रहा करेंगे.

बंदर की बातें सुनकर मगरमच्छ खुश हो गया. अगले दिन वह अपनी पत्नी के साथ पेड़ के पास आया. बंदर ने उन दोनों को जामुन खिलाए.ऐसा अब रोज ही होने लगा. बंदर और मगरमच्छ की मित्रता और भी गहरी हो गई.

# यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

एक बार की बात है एक मटरू नाम का बंदर रहता था. वह बहुत ही नटखट,चंचल प्रवृत्ति का था. वह दिनभर उछल कूद करता था जिससे उसे जोरों की भूख लगी, भूख से व्याकुल मटरू को कुछ नहीं सूझ रहा था. उसने भूख मिटाने के लिए आसपास कुछ फल खोजा आखिरकार मटरू को एक बड़े झील के पास जामुन का पेड़ मिल गया जहां पेड़ पर खूब सारे जामुन लगे थे. मटरू झट से छलांग लगाया और जामून तोड़कर खा लिया,जामुन मटरू को स्वादिष्ट लगा जिससे जामुन की याद आते ही उसके मूंह में पानी आ जाता. अब तो मटरू का वास बन गया जामुन पेड़. जामुन पेड़ पर ही उछल- कूद करता और आसपास के जरूरतमंद जानवरों -लोगों की भूख शांत करने जामुन गिराता और खूब मजे लेता. मटरू जहां रहता था खूब सारे पेड़ पौधे,पहाड़,घास,झील और मैदान थे पर बहुत कम ही फलदार पेड़ थे. पास के ही स्वच्छ जलयुक्त झील में मगरमच्छ रहते थे एक दिन मगरमच्छ भूख से बेहाल होकर झील में घूमते-घूमते जामुन पेड़ के पास आ पहुंचा वहां उसने देखा कि एक बंदर खूब सारे फल खा रहा था उसने उससे मदद मांगी और कुछ जामुन फल खाने के लिए माँगा. मटरू बंदर झट से एक डगाली को नीचे कर दिया और मगरमच्छ को जामुन खाने बोला जब मगरमच्छ ने जामुन खाया उसे खूब स्वादिष्ट लगा और उसका पेट भर गया भूख शांत हुई और उसकी जान बच गई उसने मटरू बंदर को कोटिशः धन्यवाद दिया और कहा कि क्या मैं कुछ जामुन अपने घरवालों के लिए ले जा सकता हूँ ? खूब मीठे हैं ये सारे फल. मटरू बोला क्यों नही भाई जरूर ले जाओ और जब भी भूख लगे यहीं आ जाया कीजिये जिससे खाना ढूंढने की मशक्कत ना करना पड़े. अब मगरमच्छ और मटरू की दोस्ती हो गई और मटरू मगरमच्छ के पीठ में बैठकर झील की सैर भी कर लिया करता और दोनों साथ- साथ खूब मस्ती करते. उन दोनों की दोस्ती देख बाकी जानवर काफी खुश होते. मगरमच्छ का दिमाग फिर गया उसने सोचा रोज रोज जामुन खाने से अच्छा है आज मटरू के कलेजे को ही खा लिया जाए. जामुन खाने से इसका कलेजा भी खूब मीठा हो गया होगा यह सोचते हुए उसने बंदर को सैर कराने के बहाने झील पर ले गया और झील के मध्य में बंदर के कलेजे खाने की बात कही अब अपने मौत को करीब देख मटरू को कुछ सूझ नहीं रहा था आखिर बीच झील में करता क्या बेचारा ? मटरू ने वक्त को भांपते हुए हिम्मत और चालाकी से काम लेने की सोची और दुविधा को सुविधा में बदला उसने साजिस को समझते हुए मगरमच्छ से कहा मित्र मैंने अपना कलेजा तो आज जामुन पेड़ में ही रख दिया आपको पहले बताना था जिससे मैं अपना स्वादिष्ट रसभरा कलेजा ले आता आपके लिए. मगरमच्छ असमंजस में पड गया और उसके दिमाग में कुछ नहीं सूझ रहा था. बंदर ने कहा चलो मुझे जामून पेड़ के पास ले चलो जिससे कि आपको कलेजा मिल जाए, अब मगरमच्छ मटरू को लेकर झील के तट के पास पहुंचा जिससे मटरू कि रूकी हुई सांस वापस आई और मटरू छलांग लगाकर जामुन पेड़ पर चढ़ गया और बोला विश्वासघाती, स्वार्थी जीव, धोखेबाज मैंने तुम्हारी मदद किया और तुम मुझे ही खाने की सोच

रहे थे अरे मंद बुद्धि कोई अपना कलेजा पेड़ पर रखता है भला ? मैंने तुम्हें झूठ बोला अपनी जान बचाने के लिए जाओ आज से हम दोनों की कोई दोस्ती नही कहकर वह मगरमच्छ को भगाने लगा. मटरू मन ही मन संकल्पित हुआ आज के बाद किसी अजनबी के साथ जाना जीवन के लिए ठीक नहीं और दोस्ती भी सोच समझकर करनी चाहिए. अब लालची मगरमच्छ उदास मन से वहां से भागने लगा और सोचा काश मेरे मन में इस तरह के ख़याल नहीं आते तो हमारी दोस्ती बनी रहती और विश्वास भी नहीं टूटता और मीठे जामुन भी मिलते रहते ये मैंने क्या कर दिया ? मगरमच्छ को खूब पछतावा हुआ और उसने संकल्प लिया कि जीवन में कभी किसी को धोखा नहीं दूंगा. मगरमच्छ खूब रोया पर उसने कुविचार से अपना एक प्रिय मित्र खो दिया.

# अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

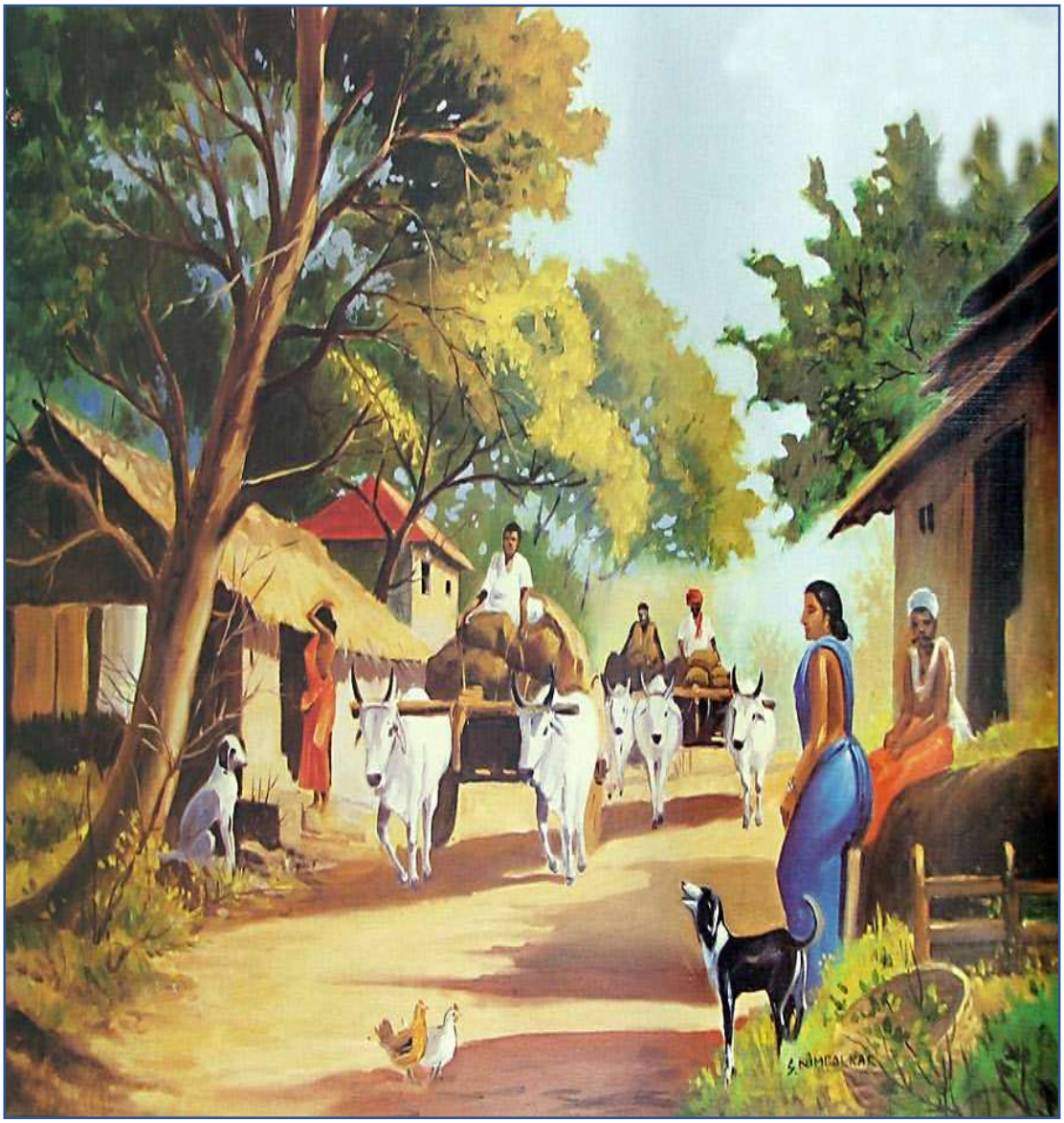

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

# अमरूद

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

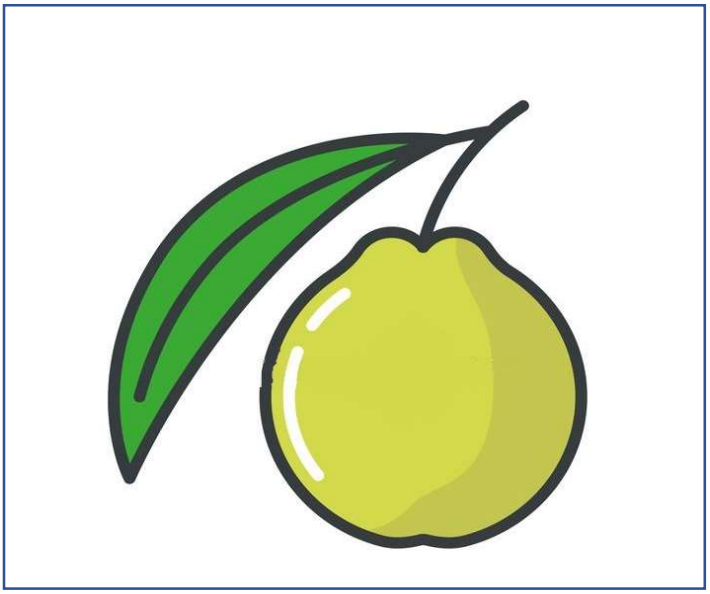

फलों में मशहूर अमरूद.
स्वाद से भरपूर अमरूद..
कच्चा हरा, पक्का पीला.
होता है बड़ा रसीला..

दिखता सुखद गोल-गोल.
लगता आकर्षक अनमोल..
इसमें खनिज,जल,प्रोटीन.
कार्बोहाइड्रेट और विटामिन..

मिटती इससे फौरन भूख.
मिलता इससे पाचन सुख..
औषधि युक्त न्यारा फल.
हम बच्चों का प्यारा फल..

# संकट में भी मुसकाओ जी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

हरदम ही खुशियाँ पाओ जी,
दुख के काँटे ठुकराओ जी.

ये जीवन मिलता मुश्किल से,
संकट में भी मुसकाओ जी.

मन की राहे अगर उलझती,
उन राहों को सुलझाओ जी.

खुशियों वाले गीत सुना के,
सबके मन को हरषाओ जी.

अगर कभी मन बोझिल होवे,
उसको झटपट बहलाओ जी.

खुशियाँ होती सदा पराई,
पाओ तो मत इतराओ जी.

# प्रकृति

रचनाकार- कु. लवली यादव, कक्षा दसवी, शा. उ. मा. वि. पहंडोर, दुर्ग

सूरज से सीखा तेज हमने,
चंद्रमा से शीतल छाया.
पेड़ों से सीखा सहना हमने,
मिट्टी कण कण में समाया.
चिड़ियों से है उड़ना सीखा,
फूलों से हम मुस्कुराना.
कोयल की कूक से सीखा,
मधुरतम गीत गाना.
नदियों से है सीखा,
गहरी सोच की धारा.
गगनचुंबी पर्वत से सीखा,
हो ऊँचा लक्ष्य हमारा.
चींटियों से है सीखा हमने,
मेहनत सदा करते रहना.
समय से है सीखा हमने,
सदा चलते रहना.

प्रकृति की कण कण में है,
सुन्दर संदेश समाया.
ईश्वर ने इसके द्वारा,
अपना रूप है दिखाया..

# हमारे प्रेरणास्रोत- डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन

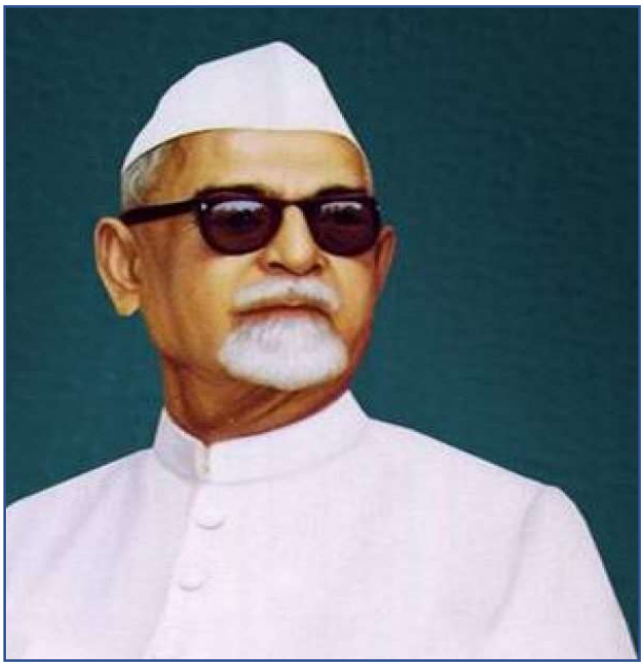

हैलो बच्चो,

आज हम बात करेंगे भारत के तीसरे राष्ट्रपति डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन की. वह एक प्रसिद्ध शिक्षाविद् और आधुनिक भारत के दृष्टा थे. उनका जन्म ८ फ़रवरी १८९७ को हैदराबाद में हुआ. उनके पिता हैदराबाद के जाने-माने वकील थे. जब जाकिर हुसैन छः साल के थे तब उनके पिता का देहांत हो गया. उनकी माताजी उन्हें लेकर उत्तर प्रदेश के गाँव मलीहाबाद में आकर बस गयीं. चौदह साल की उम्र में जब जाकिर हुसैन आठवीं की परीक्षा देने आगरा गए थे, तभी गाँव में रह रही उनकी माताजी का प्लेग की बीमारी से निधन हो गया.

जाकिर हुसैन पढ़ाई में बहुत अच्छे थे.उन्हें स्कूल की तरफ़ से वज़ीफ़ा मिलता था जिस से वह आगे की पढ़ाई कर सके. उन्होंने हाई स्कूल की पढ़ाई उत्तर प्रदेश के इटावा शहर से की, उसके बाद ग्रेजूएशन की पढ़ाई आंग्लो मोहम्मदें ऑरीएंटल कॉलेज से की, जो अब अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के नाम से जाना जाता हैं. मात्र तेईस साल की उम्र में उन्होंने नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी की स्थापना अलीगढ़ में की, जो बाद में नई दिल्ली स्थानांतरित हो गयी, इसी युनिवर्सिटी को आज जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी के नाम से जाना जाता है.

डॉक्टर जाकिर हुसैन यूनिवर्सिटी में छात्रों के बीच काफ़ी लोकप्रिय थे. वह कॉलेज के हॉस्टल में छात्रों से मिलने भी ज़ाया करते थे. वहाँ उन्हें जहाँ भी गंदगी दिखाई देती, वे खुद वहीं उसे अपने रूमाल से साफ़ करने लगते और छात्रों को भी साफ़-सफ़ाई से रहने और पढ़ने के लिए

प्रेरित करते. जब वह जामिया मिलिया विश्वविद्यालय के कुलपति थे, तभी एक सज्जन अपने पुत्र को लेकर उनके पास गए और बोले “डॉक्टर साहब, मेरा बेटा फ़र्स्ट ईयर में फेल हो गया है, आपसे निवेदन है की अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए इसे सेकंड ईयर में प्रवेश दिला दें.” ज़ाकिर साहब थोड़ी देर बाद सहज हो कर बोले, “आप जा कर एम.ए. का फ़ॉर्म ले आइए, सीधे इसी में प्रवेश दिला देंगे. जब ग़लत करना ही हैं तो थोड़ा और ग़लत कर लिया जाए.” ज़ाकिर साहब की बात सुन कर उन सज्जन ने शर्मिंदा होकर क्षमा माँगते हुए कहा कि आगे से कभी वह अपने बच्चे के लिए ‘शार्ट्कट’ खोजने की कोशिश नहीं करेंगे.

राष्ट्रपति के पद पर रहते हुए, डॉक्टर ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु ३ मई १९६९ को नई दिल्ली में हो गयी. उन्हें जामिया मिलिया यूनिवर्सिटी के कैम्पस में ही दफ़नाया गया. उनकी शिक्षा के प्रति आधुनिक सोच, अनुशासन और सादगी भरे जीवन ने उन्हें हमारा प्रेरणास्रोत बना दिया है.

# शिक्षक

रचनाकार- स्नेहलता "स्नेह"

कर्म परायण साधना, जिसमें गुरु महान.
बालक मन को जीतकर, देता नैतिक ज्ञान..

नया ज्ञान देता वही, बनता गुरु महान.
बालक मन जो जीतता, हो जग में पहचान..

गुरू मित्र बन जाइए, मधुर रहे व्यवहार.
प्रेमभाव नव ज्ञान दो, प्रथम पाठ मनुहार..

कक्षा में तब जाइए, करिए प्रथम विचार.
कब कैसी क्या सीख हो, कैसी हो रफ्तार..

गर्व करें खुद आप पर, नेक कर्म ही ताज.
गढ़कर कच्ची देह को, घड़ा बनाया आज..

ऐसा फर्ज निभाइए, ऐसा दीजिए ज्ञान.
शिक्षक ही निर्माण का, है पहला सोपान..

गुणा-भाग मौखिक कहे, बना सके सब कोण.
बालक आदर तब करें, जब गुरु हो सम द्रोण..

प्रतिभा और निखारिए, अंतर होत विकास.
ज्ञान किताबी मत रहे, व्यवहारिक भी पास..

रुकिए खुद से पूछिए, काम किया क्या खास.
नया ज्ञान क्या है दिया, कर मन में अहसास..

शुद्धिकरण हो कर्म का, आनंदित हो प्राण.
राह ताकते छात्रगण, कीजै नित कल्याण..

# नवा साल

रचनाकार- सोमेश देवांगन

दो हजार बीस के मत पूछ करलाई.
नवा साल आय के बेरा होंगे भाई.

दू हजार बीस में बिकट पेराय हन.
अपन दुख ल घोर के जग ल बताये हन..

ये साल बीतत हवय जाड़ अउ कोरोना म.
आस लगाय बइठे नवा साल के अगोरा म..

नवा साल ले सब ल हवय भारी आस.
मिलहि लेहे बर चैन ले जी भर के साँस..

कोरोना ले सब डहर ले हावन परसान.
दो हजार बीस म जग म मचे ह घमासान..

विनती हे तोला नवा साल हाथ जोर.
सब ल सुख देबे तय पाव परत हव तोर..

# बढ़ना बच्चों

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

धीरे-धीरे बढ़ना बच्चों,
हिम चोटी पर चढ़ना बच्चों.

जीवन का उद्देश्य जहाँ है,
राहें वही पकड़ना बच्चों.

बाधाएँ आ जाएँ लेकिन
रुकना मत, बस चलना बच्चों.

बनना नहीं कभी अनुगामी,
पथ नवीन तुम गढ़ना बच्चों.

काम समय पर ही होता है,
धीरज मन में रखना बच्चों.

# कोहिनूर की आभा

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे"कोहिनूर"

बढ़ जाता मन भाव में,सहज प्रखर विश्वास.
जब करते हम पर कृपा, गुरुवर घासीदास..

परम प्रर्वतक सत्य के, गुरुवर बंदी छोर.
सत प्रकाश फैला गए,दुनिया में चहुँ ओर..

श्वेत ध्वजा लहरा रही, जग में चारों ओर.
धरती से आकाश तक,सत्यनाम की शोर..

गुरुवर के दरबार, नित्य झुकाकर शीश.
पापीजन को भी मिले,शुभ पावन आशीष..

कोहिनूर करने लगा, गुरुपद का गुणगान.
तब मिटते मन से सहज, क्रोध कपट अभिमान..

# सफलता की कहानी- सोड़ी भीमे

लेखक- गौतम कुमार शर्मा

**बालिका का नाम**- सोड़ी भीमे

**संस्था का नाम-** कआकार आवासीय संस्था, कुम्हाररस, सुकमा

**कक्षा** -पाँचवी

"अपने हौसलों को मत बताओ कि, तुम्हारी परेशानी कितनी बड़ी है.
बल्कि अपनी परेशानी को बताओ कि, तुम्हारा हौसला कितना बड़ा है.."

इन पंक्तियों को चरितार्थ किया है, आज की हमारी नन्हीं बहादुर नायक सोड़ी भीमे ने. सोड़ी अस्थिबाधित दिव्यांग छात्रा है, जो आकार आवासीय संस्था कुम्हाररस, सुकमा में कक्षा 5 वीं में अध्ययनरत है. सोड़ी भीमे अतिसंवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र के पहाड़ी ढलानों पर स्थित अत्यंत पिछड़े दूरस्थ वनांचल गाँव केशापारा गुफड़ी में रहती है. इस गाँव में मूलभूत सुविधाओं की कमी है. यहाँ तक कि गाँव में सड़क तक उपलब्ध नहीं है. आइये जानते हैं हमारी नन्हीं नायक आत्मविश्वास से ओतप्रोत सोड़ी भीमे के बारे में.

सोड़ी के पिता श्री मासा सोड़ी से सोड़ी के साथ बचपन में घटित दुर्घटना के बारे में सुनकर मैं एकदम सहम-सा गया ! एक 3 साल की छोटी सी बच्ची ने असहनीय दर्द कैसे सहा होगा ? इस छोटी सी बच्ची की मन:स्थिति उस समय कैसी रही होगी ? सोड़ी के पिता ने जब मुझे बताया कि सोड़ी जब 3 साल की थी, तो ठंड के मौसम में घर के आँगन में आग तापने के दौरान खेलते - खेलते वो अचानक गिर पड़ी और उसका दाहिना पैर बुरी तरह से आग में झुलस गया और वह असहनीय दर्द से जोर -जोर से चीखने लगी. यह देखकर घर वालों का दिल दहल गया. कुछ देर पहले तक सोड़ी हंसते- खिलखिलाते, उछल-कूद करते हुए खेल रही थी और कुछ ही देर में उसकी हंसी चीख में कैसे बदल गयी ?

सोड़ी के परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने और जागरूकता की कमी होने के कारण उसके घरवालों ने उसका इलाज़ आस-पास ही कराया. उचित इलाज न होने से उसका दाहिना पैर पूरी तरह खराब हो गया. इस घटना के बाद सोड़ी का जीवन पूरी तरह से बदल गया. ये 3 साल की बच्ची एकदम चुप हो गई. न किसी से बात करना, न ही अच्छे से कुछ खाना- पीना और न ही खेलना - कूदना. इस दर्दनाक घटना ने उसकी मुस्कुराहट ही छीन ली.

इस घटना का सोड़ी पर बहुत बुरा असर हुआ था, वो किसी से भी बात नहीं करती थी. घर के एक कमरें में चुपचाप बैठी रहती थी और अपने साथ घटित उस भयानक दर्दनाक घटना के बारे में सोचकर उदास होकर रोने लगती थी. पर कहते है न वक्त बड़े से बड़े जख्म को भर देता है वैसे ही धीरे - धीरे वक्त के साथ सोड़ी के अंदर भी बहुत बदलाव आ गया और उसने अपनी इस कमजोरी को खुद पर हावी नहीं होने दिया. बहुत जल्दी वह एक ही पैर से चलना सीख गयी.

सोड़ी जब 6 साल की हुई उसके पिता ने गाँव के सरकारी स्कूल शासकीय प्राथमिक शाला केशापारा गुफड़ी में उसका नाम दर्ज करवाया. घर से स्कूल का रास्ता उबड़-खाबड़ होने की वजह से उसे विद्यालय तक पहुँचने में काफी दिक्कतें होती थी लेकिन उसके अंदर पढ़ाई की ललक की वजह से वह प्रतिदिन विद्यालय जाती थी. जब सोड़ी के बारे में सुकमा जिले में समावेशी शिक्षा के तहत् संचालित आकार आवासीय संस्था को जानकारी हुई, तो उन्होंने सोड़ी के पिता से बात करके उसका दाखिला यहाँ करवाया. शुरू - शुरू में यहाँ भी सोड़ी एकदम चुपचाप रहती थी, लेकिन धीरे - धीरे सभी बच्चों के साथ घुल - मिल गई. अब वह सभी बच्चों के साथ पढ़ाई करने के साथ खेलती - कूदती भी है.

कहते हैं कि - " एक सपने के टूटकर, चकनाचूर हो जाने के बाद, दूसरा सपना देखने के, हौसले को 'ज़िन्दगी कहते हैं. "

वैसे ही सोड़ी ने अपने जीवन का दूसरा सपना आकार आवासीय संस्था में दाखिले के बाद देखना शुरू किया. सोड़ी ने बहुत ही कम समय में इस संस्था में रहकर बहुत कुछ सीख लिया

और उसके अंदर एक नई ऊर्जा का संचार हुआ,जिसकी वजह से उसने अपनी सबसे बड़ी कमी को अपनी ताकत बना लिया और वह एक सामान्य बच्चे की तरह ही सब कुछ करने लगी.

सोड़ी की नृत्य विधा में विशेष रूचि को देखते हुए आकार आवासीय संस्था ने उसे नृत्य करने हेतु प्रेरित किया. कुछ ही दिनों में वह नृत्य विधा में भी पारंगत हो गई और आज सामान्य बच्चों के साथ भी नृत्य करती है. सोड़ी ने अपने साथ के एक मूकबधिर छात्र से प्रेरित होकर नृत्य करना शुरू किया था और आज उसकी पहचान एक कुशल नृत्यांगना के रूप में हो गई है.

पिछले वर्ष सोड़ी ने जिला प्रशासन सुकमा द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में भी नृत्य विधा में भाग लिया और काफी उम्दा प्रदर्शन किया. इस कार्यक्रम में जिले के बड़े अधिकारियों समेत पूरा शहर उपस्थित था. सोड़ी को एक पैर से इतना अच्छा प्रदर्शन करता देख तालियों की जो गड़गड़ाहट हुई, उससे पूरा शहर गूँज उठा और सभी ने उसके हौसले और हिम्मत की जमकर प्रशंसा की. सोड़ी ने अपनी हिम्मत से यह साबित कर दिया कि हमें किसी भी स्थिति में हार नहीं मानना चाहिए.

"डर मुझे भी लगा फासला देखकर, पर मैं बढ़ता गया रास्ता देखकर.
खुद-ब-खुद मेरे नजदीक आती गई, मेरी मंजिल मेरा हौसला देखकर.. "

# जंगल में नया साल

रचनाकार- सोमेश देवांगन

जंगल में हुआ नया साल मनाने का आयोजन.
बने थे वहाँ तरह -तरह के बहुत सारे व्यंजन..

न्योता देने निकला सबको, छोटा कालू बंदर.
साल नया मनाना है, इस गुफा के अंदर..

एक -एक करते आ रहे,पाकर प्यारा न्योता.
हाथी घोड़ा भालू बंदर,बुलबुल मैना तोता..

आया भोजन में रसगुल्ला, फिर आई रसमलाई.
खाने की तब होड़ लग गई,छुटपुट हुई लड़ाई..

पूड़ी सब्जी बड़े कचौरी,और भटूरे छोले.
जल्दी - जल्दी खाए कोई, कोई हौले-हौले..

गाजर का हलवा जब आया, सबका मन ललचाया.
सबकी आंख बचा भालू ने, खूब दबा कर खाया..

खाना-पीना हुआ खत्म जब, लगे बजाने बाजा.
आया साल नया कह नाचे, इस जंगल के राजा..

लगे नाचने साथ सभी और गज़ब का रंग जमाया.
भोर सुहानी होने तक फिर सबने जश्न मनाया..

# छेरछेरा तिहार

रचनाकार- सपना यदु

आगे रे संगी छेरछेरा तिहार,
लइका खुश होगे अउ,
सियानो में छाए,
खुशी के फुहार.

झोला, टूकनी अउ कांवर धरके,
पारे संगी मन ह गोहार.
छेरछेरा मांगे ला जाए,
सबो संगी जोहार..

फसल कटगे, धान मिंजागे,
कोठी ह खचाखच भरागे.
छेरछेरा के ये तिहार ह,
अन्नदान के परब कहाथे..

पूस पूर्णिमा दिन म भाई,
नाचे लइका अउ डोकरी दाई.
कोन्हों गावत हे धनी पुनी अउ,
कोन्हों हेरावत हे कोठी के धान..

कुकरा बासे लईका मन चिल्लावे,
छेरछेरा... कोठी के धान ला हेर हेरा.
अउ कोन्हों कहाथे,
अरन बरन कोदो दरन, जभे देबे तभे टरन..

संझा कुन माई लोगोन ह गावै,
धनी पूनी के गीत..

लइका सियान सबो मित होगे,
धनी पुनी ह एक गीत होगे.
देख के दान करत किसान भाई ला,
धरती दाई हा घलो, फूल कस खिलगे..

दया धरम अउ, दान करम के,
मन म नीर बोहाथे.
छेरछेरा के ये तिहार ह संगी,
अन्नदान के परब कहाथे..

# धूप सलोनी

रचनाकार- शयाम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

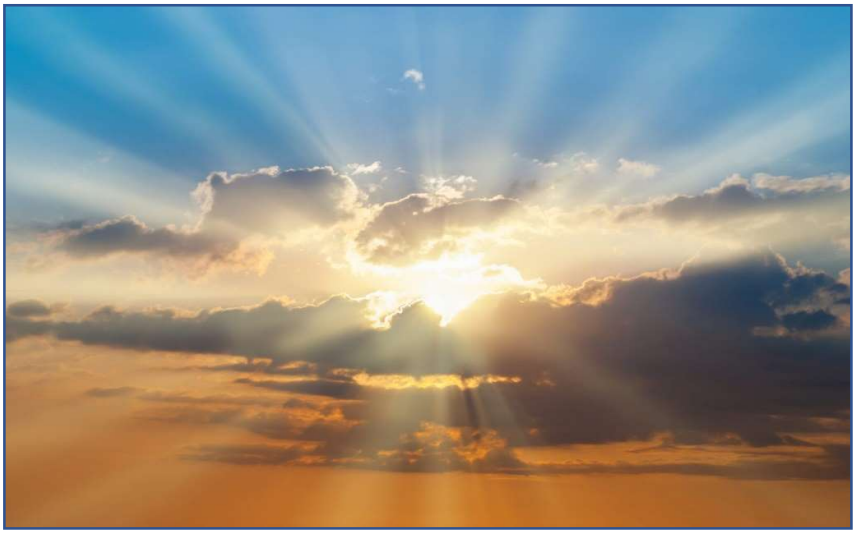

धूप सलोनी गुनगुनी, पल-पल होती दूर.
उसकी मृदु कोमल छुअन, सुख देती भरपूर.
सुख देती भरपूर, सुनहली उजली-उजली.
छुप जाती है झाँक,कभी बदली में पगली.
कह 'कोमल'कविराय, बनी है ज्यों मृग छौनी.
क्षण-क्षण बदले रूप, लजीली धूप सलोनी.

# सड़क अनुशासन

रचनाकार- ऋषि गर्ग

दाएं देख बाएं देख
कूड़ा नहीं सड़क पर फेक
साइन बोर्ड के पढ़ले लेख
फिर अपना कदम आगे टेक

पहले सोच, है जाना कहां
धीरे चला गाड़ी
हेलमेट ज़रूर लगा
मंज़िल की सोच जाना है जहां

दिखावे में कुछ नहीं रखा
जीने की तमन्ना ना हो
तो बात अलग है
दूसरों की भी सोच

ध्यान रख ये मेरा मत है
इन पंक्तियों के जरिए सबको ये खत है
तू ना बिगड़ भविष्य अपना
दूसरों का भी ख्याल रखना

सारे कानून दिमाग में रखना
सड़क पे चलते वक्त याद उन्हें रखना

# ज्ञान की पाती

रचनाकार- चानी आरी

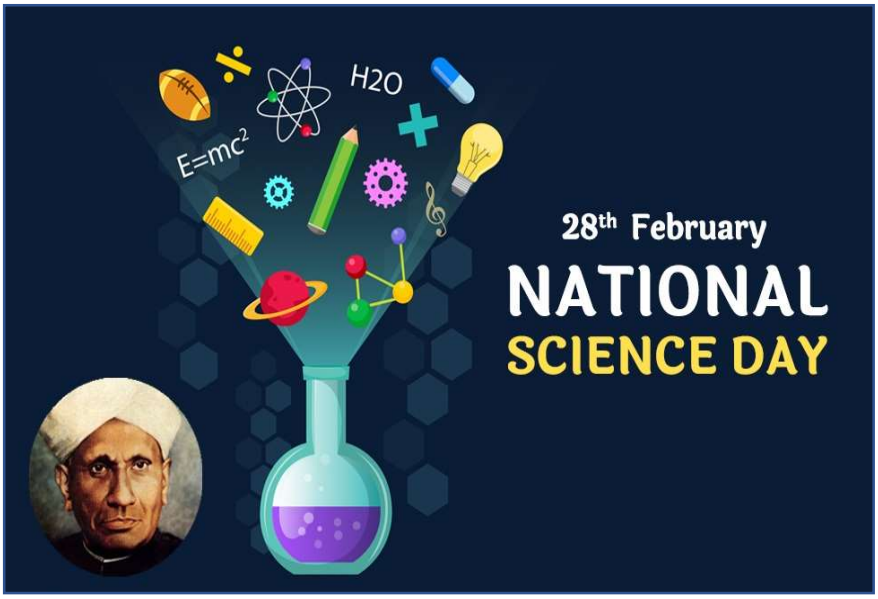


## राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

भारत में सन् 1986 से हर साल 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है. प्रोफेसर सी. वी रमन ने सन् 1928 में इसी दिन एक महत्वपूर्ण खोज की थी, जो रमन प्रभाव के नाम से प्रसिद्ध है.

रमन प्रभाव में डाक्टर सी वी रमन ने प्रकाश किरणों के व्यवहार की व्याख्या की.रमन प्रभाव के अनुसार एकल तरंग (मोनोक्रोमेटिक किरणें), जब किसी पारदर्शक माध्यम जैसे- गैस, द्रव या फिर ठोस गैस से होकर गुजरती है तब मूल प्रकाश की किरणों के अलावा स्थिर अंतर पर बहुत कमजोर तीव्रता की किरणें भी उपस्थित होती हैं. इन्हीं किरणों को रमन-किरण कहते हैं.

**राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने का उद्देश्य**

छात्र-छात्राओं में विज्ञान के प्रति रुचि जगाना है. उन्हें विज्ञान के क्षेत्र में नए प्रयोगों के लिए प्रेरित करना और विज्ञान एवं वैज्ञानिकों की उपलब्धियों के बारे में बताना भी है

देशभर में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के दिन प्रयोगशाला, विज्ञान अकादमी, विज्ञान संस्थान, स्कूल, कॉलेज तथा प्रशिक्षण संस्थानों में कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं.

# 13 फरवरी- विश्व रेडियो दिवस

विश्व रेडियो दिवस मनाने का उद्देश्य जनता और मीडिया के बीच रेडियो के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना है.यह निर्णयकर्ताओं को रेडियो के माध्यम से सूचना एवं जानकारी प्रदान करने, नेटवर्किंग बढ़ाने तथा प्रसारकों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहित करता है. आज भी करोड़ों लोग रेडियो सुनते हैं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो के प्रयोग को एक नई दिशा दी है,वे रेडियो पर 'मन की बात'करते हैं, जिसे करोड़ों लोग रेडियो पर सुनते हैं. इस तरह प्रधानमंत्री मोदी ने रेडियो को दोबारा लोगों के घर में पहुँचाया है. आज कोरोना काल मे बच्चो की पढाई जारी रखने में भी रेडियो का उपयोग किया जा सकता है. जहाँ सुरक्षा की दृष्टि से बच्चो को शालाओ मे नही बुलाया जा रहा है वहाँ रेडियो बच्चों तक पहुँचने का उपयोगी माध्यम हो सकता है.

# पेड़-पौधे

रचनाकार- सपना यदु

बीज लगाओ तो निकलें पौधे, बढ़कर लेते वे जगह को घेर.
मोटे तने, निकले फूल-पत्ती,वे कहलाते हैं देखो पेड़..

पेड़ मीठे फल और राहगीरों को छाँव हैं देते.
बच्चे इसकी डाल पर झूलें, खूब मज़े हैं सब लेते..

चाहे हो घनघोर अँधेरा, रहता पंछियों का इसमें बसेरा.
चीं-चीं करके ये बताएँ, देखो भाई हो गया सवेरा..

शुद्ध हवा ये पेड़ हैं देते, और ये वर्षा को हैं बुलाते.
लेकर सभी विषाक्त गैसों को, ऑक्सीजन हैं हमें देते..

बारिश आती अगर अचानक, इसके नीचे हम छुप जाते.
पेड़-पौधे ही इस धरती को, देखो हैं दुल्हन बनाते..

# सुरुज

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

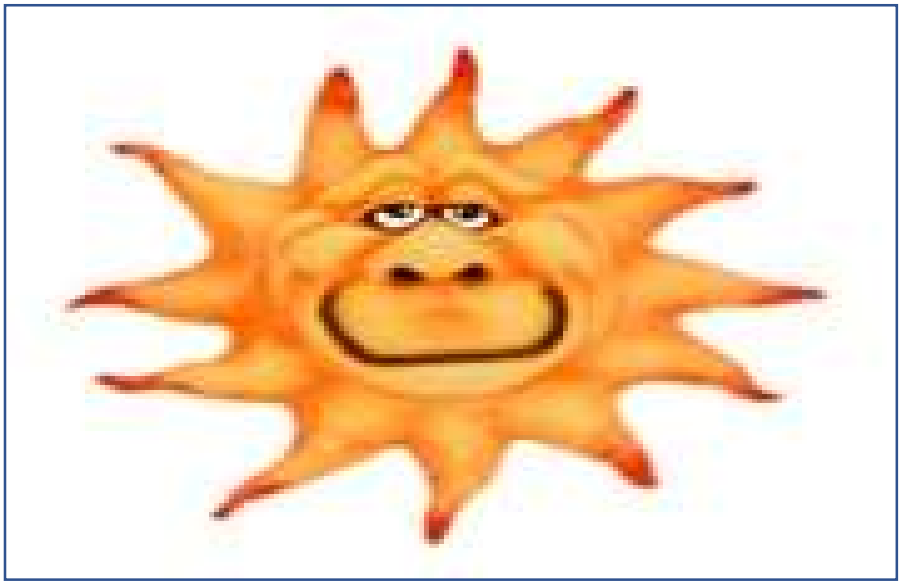

सुत उठ के बड़े बिहिनिया उत्ति माथ नवाबोंन.
नवा बेरा के अगोरा म चल सुरुज ल परघबोन..

हलधरिया चल नागर धर डोली डहर म जाबोन.
करम करके भाग बनाबों पसीना ल चुचवाबोंन..

टूटहा छानी अउ कुरिया ह मोर दिखे दुवारी.
इहि मोर परान संगी अउ इहि मोर चिन्हारी..

नवा जमाना आगे संगी अउ बेरा घलो बदलेगे.
आनी बानी फेसन आगे ओनहा घलो बिगड़गे..

कोन्हों हमर पूछैय्या नइहे कोन डहर म जाबोन.
रद्दा अपन चतवारे बर चल सुरुज ल परघाबोन..

सुरुज ल परघाबो.....

# उपवन

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

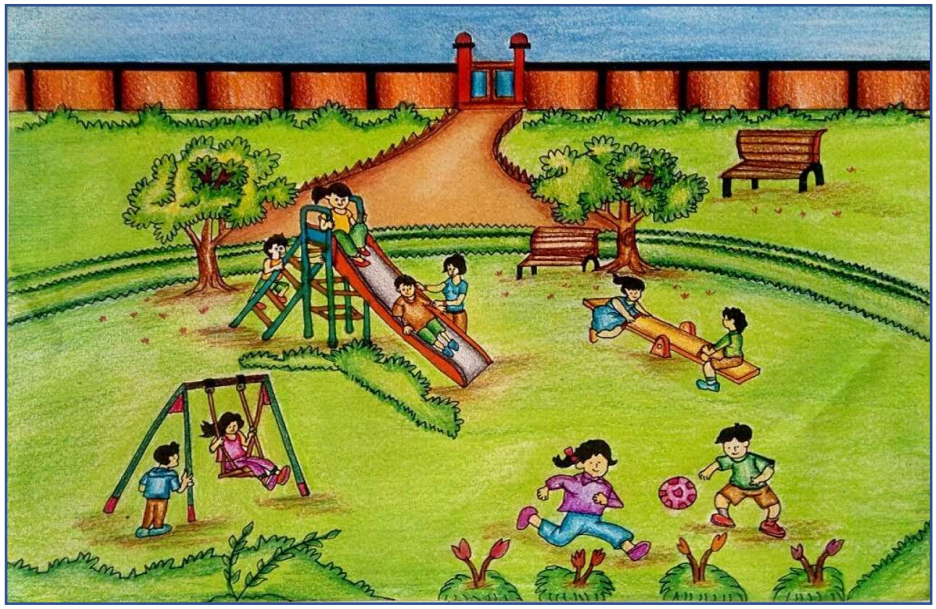

माली उपवन देखता, रोज लगाते फूल.
खाद दवाई डालते, नहीं बैठती धूल..
नहीं बैठती धूल, सदा वह पानी डाले.
सुंदर-सुंदर फूल, बाग में अपने पाले..
महक उठा संसार, सजे फूलों से थाली.
रखते सुंदर साफ, रोज उपवन को माली..

अर्पित करते फूल जी, सभी सजाते द्वार.
उपवन चुनते पुष्प हैं, और बनाते हार..
और बनाते हार, राम जी खुश हो जाते.
मंदिर जाते लोग, चरण में माथ झुकाते..
खुश हो जाते देख, करे वह पुष्प समर्पित.
लेते आशीर्वाद, राम को करते अर्पित..

# महाराणा प्रताप का परिचय

रचनाकार- नंदिनी राजपूत

9 मई 1540 में जब कुंभलगढ़ में हरियाली छाई,
महाराणा प्रताप के जन्म पर पूरे मेवाड़ ने खुशहाली मनाई.

पिता थे जिनके राणा उदय सिंह, माता जयवंता बाई
इन दोनों की सूनी गोद में, प्रताप ने कमल खिलाई.

गुरु बनकर जो माता ने शिक्षा दी प्रताप को,
अपने कदमों में झुकाया, पूरे मुगल साम्राज्य को,

अजब्दे ने पत्नी का ऐसा धर्म निभाया,
युद्ध के समय प्रजा का मनोबल बढ़ाया.
धर्म परायण, सुशील संस्कारी थी वह नारी,
गर्व होता है हमें हम हैं राजपूताना क्षत्राणी..

नील अफगानी चेतक ने ऐसी वीरता दिखलाई,
कई युद्धों में प्रताप को विजय दिलाई.
चेतक की बहादुरी को है मेरा बारंबार सलाम,
घोड़ा होकर भी जिसने किया मानवता का काम.

अकबर ने अपने शासनकाल में ऐसा जोर लगाया,
अनेक राजाओं के साथ-साथ प्रताप को भी अधीनस्थ करने का मन बनाया.
उसकी यह मनसा मरते दम तक ना पूरी हो पाई,
प्रताप को पकड़ना तो दूर की बात, उनकी छांव को भी छू ना पाई.

हल्दीघाटी युद्ध ने पूरे हिंदुस्तान में ऐसा हड़कंप मचाया,
राजपूतों को ही राजपूतों के खिलाफ लड़ाया.
फिर भी प्रताप ने राजपूताना धर्म निभाया,
लड़ते हुए भाइयों को भाईचारा का पाठ पढ़ाया.

हल्दीघाटी युद्ध ने सब कुछ बर्बाद कर दिया,
बड़ों और बच्चों को अन्नजल का मोहताज कर दिया.
क्षत्राणी महिलाओं ने भी राजपूताना धर्म निभाया,
अपनी लाज बचाने खातिर जौहर को अपनाया.

भाई होकर भी जगमाल ने ऐसा शत्रुता निभाया,
प्रताप के खिलाफ जाकर अकबर से हाथ मिलाया.
फिर भी प्रताप ने तन-मन से हार ना मानी,
हल्दीघाटी युद्ध के समय जंगल में ही रात गुजारी.

घास की रोटी खा-खाकर, अरावली गुफाओं में रात गुजारी.
अनेक कष्टों को झेलते हुए भी इसने हार न मानी.
छापामार, गुरिल्ला युद्ध पद्धति ने ऐसी रंग दिखाया,
अकबर को एक बार नहीं बारंबार बार मात दिलाया.

अकबर का जो सपना था, वह सपना ही रह गया.
प्रताप के शौर्य के आगे, वह भी घुटने टेक गया.

युद्ध शिकार की चोटों ने शरीर में ऐसी छाप बनाई,
29 जनवरी 1597 को पूरे हिंदुस्तान में काली घटा छाई.

57वर्ष की उम्र तक ही साथ निभाया,
जाते-जाते प्रताप ने देशभक्ति का पाठ पढ़ाया.

शौर्य, पराक्रम, बलिदान, साहस, देशभक्ति ही है जिनकी पहचान,
ऐसे महाराणा प्रताप जी को मेरा बारंबार प्रणाम

# दादी की तरकीब

रचनाकार- जतिन वर्मा, वाघोली, पुणे

समर राजनगर में अपने माता पिता के साथ रहता था. वह पढाई में होशियार था मगर थोड़ा आलसी था. उसे चाट पकौड़ा खाना बहुत पसंद था. एक दिन बाजार का दूषित चाट खाने से उसे बुखार हो गया. दो दिनों तक दवा लेने से उसका बुखार तो उतर गया,मगर कमजोरी आ गई. डाक्टर ने कहा --"डट कर खाओ कमजोरी दुम दबाकर भाग जाएगी. "मगर समर के मुख का स्वाद खराब हो गया था, उसकी भूख मर गई थी. उसे कुछ भी खाना अच्छा नहीं लग रहा था. माँ उसके पसंद का खाना पकाती पर वह एक रोटी भी बड़ी मुश्किल से खा पाता.सभी समर की भूख से परेशान थे.

तभी दादी गाँव से आईं. समर को देखकर उन्हें हैरानी हुई, उन्होंने पूछा -"अरे समर इतना कमजोर कैसे दिख रहा है"

समर बोला--"दादी, बुखार के बाद मेरी भूख गायब हो गई है."

दादी ने सोचा, कुछ करना पडेगा.

अगली सुबह दादी ने समर को जगा कर कहा --"चल समर टहल कर आते हैं, मुझे यहाँ के रास्ते नहीं पता, तू साथ चलेगा तो ठीक रहेगा. "

समर को दादी के साथ मन मार कर जाना पड़ा. बाहर निकले तो सुहानी बयार चल रही थी,पक्षी चहक रहे थे,कुछ बच्चे फुटबाल खेल रहे थे, कुछ कसरत कर रहे थे. दोनों पार्क पहुँचे.

पार्क पहुँच कर दादी एक बेंच पर बैठ गईं और समर से कहा -"जाओ देखो आसपास कहीं नीम का पेड़ है, उसकी नरम पत्तियां और दातून के लिए डंठल तोड़ कर लेते आना. "

समर नीम का पेड़ ढूँढने निकला. पार्क के तीन चक्कर लगाने के बाद भी जब उसे कहीं नीम का पेड़ नहीं दिखा तो उसने माली काका से पूछा -'काका, ये नीम का पेड़ कहाँ मिलेगा ?"

काका ने हँसते हुए कहा --"अरे ये सामने तो नीम का पेड़ है. "

समर ने देखा, सामने ही नीम का पेड़ था. उसने झटपट एक डंठल तोड़ी और मुलायम पत्ते लेकर दादी के पास चला. फिर वे घर पहुँचे.

घर पहुँच कर दादी ने ऐलान किया --"आज नाश्ता मै बनाउँगी, देखना समर को नाश्ता पसंद आएगा."

फिर दादी समर से बोलीं --"बेटा जल्दी से जाकर धनिया पत्ती, हरी मिर्च ले आ, जब तक मै बाकी नाश्ते की तैयारी करती हूँ. "

समर बोला --"ठीक है दादी मै अभी गया और अभी आया. "मगर साइकिल पंचर थी, उसे पैदल ही जाना पड़ा. दादी मुस्कुरा रहीं थीं.

फिर दादी ने पोहा बनाया. सभी ने मजे से खाया, समर बोला --"दादी थोड़ा पोहा और मिलेगा, "मगर तब तक पोहा ख़त्म हो चुका था. दादी ने कहा --"बेटा कल से थोड़ा ज्यादा नाश्ता बना दूँगी. "

नाश्ता करके समर पढ़ने बैठा. दो घंटे बाद ही उसे भूख लग आई. वह किचन में पहुँचा, शायद कुछ बिस्किट मिल जाएँ, मगर वहाँ मैदान साफ़ था.

दादी ने समर से कहा --"जाओ नहा कर आओ. "समर नहा कर आया. दोपहर के बारह बज रहे थे. फिर उसने भोजन माँगा तो दादी ने बताया, थोड़ा वक्त लगेगा. फिर दादी ने कहा, "--बेटा, देखो माँ कपड़े धो रही है, उन्हें सुखाने के लिए छत पर डाल आओ. "

एक घंटे बाद समर को भोजन मिला. दादी ने चमत्कारिक भोजन बनाया था. समर ने छक कर खाया.उसकी भूख खुल चुकी थी.

शाम को दादी फिर उसे घूमने के लिए बाहर ले गई. वहाँ मैदान में बच्चे फुटबाल खेल रहे थे.

दादी ने कहा --"मुझे फ़ुटबाल का खेल बहुत पसंद है,तुम जाकर खेलो, मै यहाँ बैठकर देखती हूँ. "

समर मैदान में उतरा. पहले वह बे मन से खेलता रहा. बाद में उसे फुटबाल खेलने में मजा आने लगा.

एक घंटे बाद दादी और समर जब वापिस लौटे तो समर पसीने से लथ पथ था. घर पहुँच कर उन्होंने चाय पी. रात को भी समर ने मजे से खाया.

दादी सात दिन रहीं. सातों दिन समर उनके साथ रहा. जब दादी जाने लगी तो समर उदास हो चला.

दादी ने कहा--"बेटा सुबह की सैर करते रहना और शाम को फ़ुटबाल खेलते रहना."

समर ने कहा--"हाँ दादी, मैं अब अच्छी सेहत का राज जान गया हूँ."

दादी जाते जाते उसे एक पैकेट दे गईं. दादी के जाने के बाद उसने व्यग्रता से पैकेट खोला. उसमे ढेर सारे बिस्किट और नमकीन के पैकेट थे. मगर अब वो ये सब खाना भूल चुका था. दादी की तरकीब ने समर की जिंदगी ही बदल दी.

# सरस्वती वंदना

रचनाकार- अंकुर सिंह

हे विद्यादायिनी ! हे हंसवाहिनी !
करो अपनी कृपा अपरंपार.
हे ज्ञानदायिनी ! हे वीणावादिनी !
बुद्धि दो ! करो भवसागर से पार..

हे कमलवासिनी !, हे ब्रह्मापुत्री !
तम हर, ज्योति भर दो.
हे वसुधा !, हे विद्यारूपा !
वीणा बजा, ज्ञान प्रबल कर दो..

हे वाग्देवी !, हे शारदे !
हम सब है, तेरे साधक.
हे भारती !, हे भुवनेश्वरी !
दूर करो हमारे सब बाधक..

हे कुमुदी !, हे चंद्रकाति !
हमने ज्ञान तुमसे है पाया.
हे जगती !, हे बुद्धिदात्री !
हमारा जीवन तुममें समाया..

हे सरस्वती !, हे वरदायिनी !,
तुम्हारे हाथों में वीणा खूब बाजे.
हे श्वेतानन !, हे पद्यलोचना !
तुम्हारी भक्ति से मेरा जीवन साजे..

हे ब्रह्म जाया !, हे सुवासिनी !
कर में तुम्हारे ग्रंथ विराजत.
हे विद्या देवी !, हे ज्ञान रूपी !
ज्ञान दे करो हमारी हिफाजत..

# जाड़े में बरसात

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

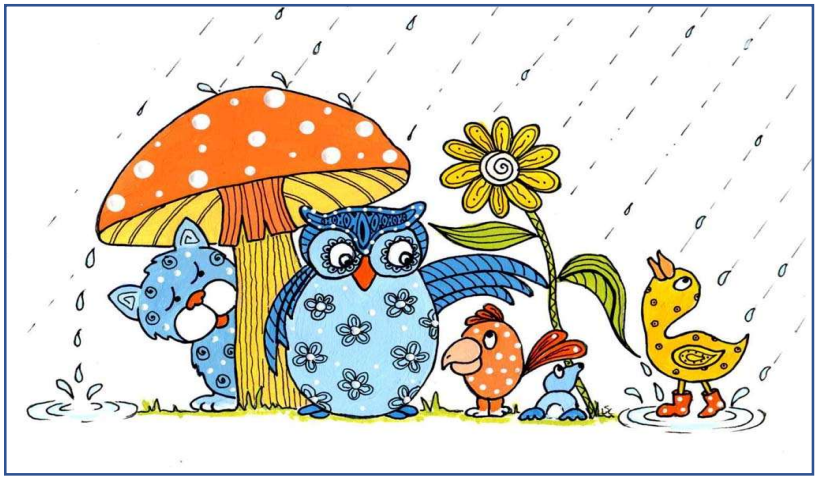

ठिठुर-ठिठुर ठिठुरता जाड़ा,
पवन चले झकझोरे.
जगह-जगह अलाव जलाए,
सूरज सर्द निचोड़े.

आसमान में छिटके बादल,
करते हँसी ठिठोली.
बर्फ के गोले फेंक रहे हैं,
बन करके हमजोली.

धरती पर बारिश की बूँदें,
अमृत रस बरसातीं.
सरसों,गेहूँ,चना,मटर को,
जीवन-सा दे जातीं.

ठिठुरन और गलन को थोड़ा,
कम किया बारिश ने.
जनजीवन को सरस बनाकर,
संदेश दिया बारिश ने..

# हमन सुजान

रचनाकार- द्रोपती साहू "सरसिज"

बेरा- बेरा मा काम हम करबो.
खेलबो कूदबो पढ़बो लिखबो..

गली खोर मा हिलमील के संगी.
हम भागा दौड़ी अड़बड़ करबो..

मोबाइल ला जादा नइ देखन.
पढ़ाई खेल मा समय लगाबो..

बिना बताए घर के कोन्हों ला.
कभू बरपेली कहूँ नइ जाबो..

मनमरजी मा बड़ होथे खतरा.
हम परसानी मा काबर परबो..

# चपलता

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

ये चपलता
स्थायीपन भले ही न दे,
पर देता है प्रसन्नता, अल्हड़ता,
जीने का बिंदासीपन, खुशियां,
बेवजह की मुस्कुराहट
औऱ आस पास के लोगों को भी

मजबूर कर देता है मुस्कुराने को,
कभी कभी तंग भी,
पर गुस्सा नहीं कभी नहीं.

ये चपलता ही तो है
जो कभी वृद्ध नहीं होने देती
एक बचपना- सा उम्र रहता है
तमाम जिंदगीभर
उल्लास लिए हड़बड़ी चुलबुलापन.

कभी -कभी
सफलता तक भले ही न जा पाये,
पर जीवन सरल बना देता है,
चिंता जिसके पास नही फटकती.

बेख़ौफ़ जिंदगी कितनी अच्छी होती है न,
विचारों में डूबे रहने सेये चपलता
स्थायीपन भले ही न दे,
पर देता है प्रसन्नता,अल्हड़ता,
जीने का बिंदासीपन, खुशियां,

बेवजह की मुस्कुराहट
औऱ आस पास के लोगों को भी
मजबूर कर देता है मुस्कुराने को,
कभी कभी तंग भी,
पर गुस्सा नहीं,
कभी नहीं.

ये चपलता ही तो है
जो कभी वृद्ध नहीं होने देती
एक बचपना- सा उम्र रहता है
तमाम जिंदगीभर
उल्लास लिए हड़बड़ी चुलबुलापन.

कभी -कभी
सफलता तक भले ही न जा पाये,
पर जीवन सरल बना देता है,
चिंता जिसके पास नही फटकती.

बेख़ौफ़ जिंदगी कितनी अच्छी होती है न,
विचारों में डूबे रहने से
भाती है ये चपलता मुझे.
भाती है ये चपलता मुझे.

# ठग

रचनाकार- श्वेता तिवारी

दीपक के पिताजी शहर में नौकरी करते थे. दीपक उन्हीं के साथ रहता था और शहर के विद्यालय में पढ़ता था. दीपक के दादा दादी चाचा चाची गाँव में रहते थे और खेती-बाड़ी का काम करते थे. एक बार दीपक अपने दादा दादी के पास आया तो देखा गाँव में रेलवे स्टेशन के पास बहुत रौनक है एक बड़ा सा तंबू लगा हुआ है स्पीकर लगा हुआ है, लोग आ-जा रहे हैं वहाँ कुछ संत आए हुए थे,वे कई चमत्कार करते थे.चाचाजी ने दीपक को बताया, जानते हो ये संत किसी के शरीर से भूत निकालना जानते हैं, भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में बताते हैं, धन दुगना कर देते हैं. चाचा संत का गुणगान करने लगे.आप क्या कर रहे हैं चाचा, जादू से कभी धन दुगना होता है? सही कह रहा हूँ दीपक, चाचा ने विश्वास से कहा. कोई ठग होंगे चाचा, आप फँस मत जाना. इस तरह नहीं बोला करते चाचा ने डाँटते हुए दीपक से कहा. संत के लिए इस तरह के शब्द बोलने से कुछ भी हो सकता है चाचा घबराए हुए स्वर में बोले.दीपक ने चाचा से बहस करना उचित नहीं समझा थोड़ी देर में दादा- दादी भी संत के दर्शन करके लौट आए. वे भी उनका गुणगान करने लगे, बोले संत गाँव वालों से बहुत प्रसन्न है वह कल चले जाएँगे. जाते-जाते वे गाँव वालों की गरीबी दूर करना चाहते हैं. वह कैसे? चाचा ने पूछा.आज रात संत धन को दुगुना करने का कार्य करेंगे गाँव में जिस किसी को भी अपना धन दुगुना करवाना हो वह संत के पास चमत्कारी संदूक में अपना धन रखवा दें.संत संदूक में ताला लगा देंगे और चाबी गाँव के ही किसी व्यक्ति को दे देंगे सुबह तक धन दुगुना हो जाएगा और दुगुना ही लौटाया जाएगा,दादाजी ने बताया. दादाजी की बातें सुनकर दीपक तुरंत अपने पिताजी को बताने दौड़ पड़ा जो खेत पर चले गए थे.खेत पर पहुँचकर दीपक ने धन दुगना

करने वाली बात अपने पिताजी से कही. पिताजी बोले,हम क्या कर सकते हैं? गाँव में आज भी लोग अंधविश्वासी हैं. लेकिन इस तरह तो वे लोग पूरे गाँववालों का धन लूट कर भाग जाएँगे, हमें पुलिस को अवश्य सूचना देनी चाहिए,दीपक बोला. हाँ, यह बात ठीक है दीपक के पिताजी बोले.फिर दीपक के पिताजी ने पुलिस वालों को बुलाया और पूरी योजना उन्हें समझा दी. रात तक गाँव के लगभग सभी व्यक्तियों ने अपनी जमा पूँजी कपड़े की पोटलियों में भरकर संत के पास रखे संदूक में डाल दीं. बाद में एक संत ने संदूक में ताला लगाया और गाँव के ही एक आदमी को चाबी सौंप दी,फिर सभी लोगों से कहा गया कि वे सुबह आकर दुगना धन प्राप्त कर लें. सभी लोग अपने अपने घर की ओर चल दिए. अब पुलिस वालों ने अपना काम शुरू किया वे पास ही पेड़ों और झाड़ियों की ओट में छिप गए. थोड़ी देर बाद सभी संत तंबू से निकल कर जाने लगे. एक संत के सिर पर वह चमत्कारी संदूक भी रखा था. पुलिस वालों ने तुरंत संतों के भेष में आए ठगों को वहीं दबोच लिया और थाने में बंद कर दिया अगले दिन थानेदार ने गाँव वालों को पूरी बात बताई तो सभी गाँव वाले दीपक की होशियारी की तारीफ करने लगे जिसने उन्हें कंगाल होने से बचा लिया.

# नव विक्रम संवत्सर

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

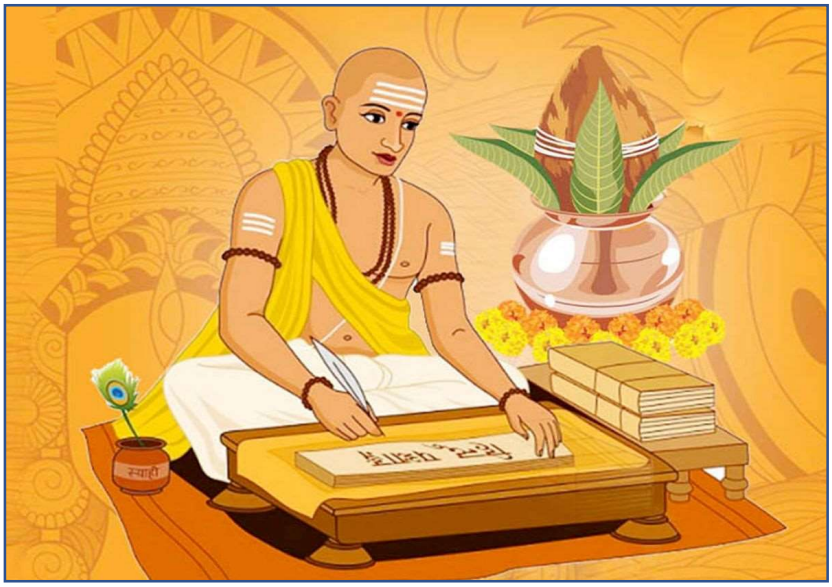

भारतीय संस्कृति और प्रकृति का, परिचायक है संवत.
वीर विक्रमादित्य नाम से, ख्यात है विक्रम संवत.

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा दिवस से, है संवत प्रारंभ.
कहते हैं इस प्रथम दिवस को, सृष्टि हुई आरंभ.

संवत्सर के एक वर्ष में, होते हैं दो पूर्ण अयन.
छह- छह मास सूर्य रहता है, उत्तरायण और दक्षिणायन.

एक वर्ष के पूर्ण चक्र में, मासों की संख्या बारह.
वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर हैं ऋतुएँ छह.

शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष, होते दो पक्ष प्रत्येक मास.
वैज्ञानिक शुद्ध कालगणना, संवत देता है सत्यभास.

भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय, राष्ट्रीय धार्मिक संवत्सर.
भारतीय संस्कृति के मूर्तरूप, विक्रमादित्य का नाम अमर.

विक्रमादित्य थे धीर - वीर, विद्वान, न्यायप्रिय जननायक.
है नमन तुम्हें भारत सपूत, हे! आयुर्वेद कला साधक.

# पकवान

रचनाकार- सोमेश देवांगन

छतीसगढ़ी पकवान ठेठरी खुर्मी अउ सोहारी.
बनय तसमई घरों घर होली अउ देवारी..

गुलगुला भजिया मुर्रा -करी लाडू बढ़ भाय.
इखर आघु म मोला बर्गर पिज़्ज़ा मैगी नई सुहाय..

फरा चीला मुठिया अउ मुरकू ल सब झन खाथे.
सूजी पकवा कतरा संग म जलेबी गजब मीठाथे..

रखिया बरी बने बिजौरी सुंघहर बने बफ़ौरी.
अम्मठ में चूरय सुघ्हर मसूर संग जरी..

लाई मुर्रा फूटे चना अउ उखरा बढ़ भावय.
ये सब लेहे बर मनखे मेला मड़ई जावय..

अतका कन हवय मोर छ्त्तीसगढ़ के पकवान.
कविता में नई हो सकय जी ऐखर गुनगान..

# मकर संक्रांति

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सुबह -सुबह उठकर बाबा.
नदी नहाने जाते हैं..
हर हर गंगे जपते रहते.
डुबकी साथ लगाते हैं..

दादी, मम्मी, ताई मिलकर.
लड्डू सभी बनाते हैं..
तिल के लड्डू अच्छे लगते.
बैठ मजे से खाते हैं..

दान दक्षिणा करते मिलकर.
मन्दिर में सब जाते हैं..
फूल नारियल भोग लगाते.
घर प्रसाद को लाते हैं..

सभी मनाते मकर संक्रांति.
पतंग साथ उड़ाते हैं..
खुशियों का त्यौहार मनाते.
बच्चे गाना गाते हैं..

नये -नये सब खेल खिलौने.
दादा घर पर लाते हैं..
मीठी -मीठी तिल की लड्डू.
मिलजुल कर सब खाते हैं..

# गोदना वाली गेंदा

रचनाकार- रजनी शर्मा बस्तरिया

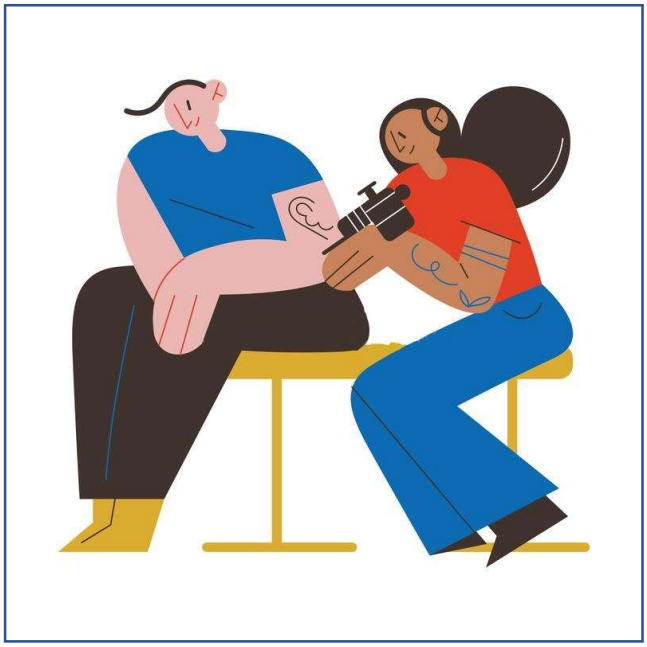

'गेंदा' नाम था उसका, धूप में सुनहरे हो चुके बालों की चंपई आभा में वह मेड़ पर खिले 'भटकटईया' के फूल सी हमेशा खिली-खिली रहती थी.उसकी ठुड्डी में गोदने के टप्पे उसके व्यक्तित्व को और विशेष बनाते थे. आज उसके स्कूल में एक नई छात्रा आई थी. उसके हाथो में, गले में 'टैटू' का चिन्ह भी था. गेंदा ने अपनी कलाई की ओर देखा. उसने दोस्ती करने के लिए पूछा. क्या नाम है तुम्हारा ? उसने कोई जवाब नहीं दिया. गेंदा स्कूल की छुट्टी होने पर वापस अपने घर आ गई. वह सभी से बातें करती फुदकती गौरैया सी पूरे शाला परिसर में फिरा करती थी.

साधारण से कपड़े, हौसलों की बिंदी, साहस का बस्ता, यही उसकी जमा पूँजी थी. सब कुछ सामान्य चल रहा था. पर धीरे-धीरे उस टैटू वाली लड़की ने गोंदा के हाथ में गोदने को लेकर चिढ़ाना शुरू कर दिया था. अब यह रोज की बात हो गई थी. उसका नाम रख दिया गया था 'देहाती गेंदा'.

गेंदा बहुत रुँआसी हो गई थी. उसने अपनी मां को इस घटना के बारे में बताया और जिद करने लगी कि मेरी कलाई से यह गोदना का निशान मिटवा दो. यह क्या सुन कर माँ ने गेंदा को प्यार से पुचकारा और खुब समझाया.

अगले सप्ताह स्कूल मे वाद-विवाद प्रतियोगिता थी. विषय था पारंपरिक गोदना वर्सेज आधुनिक टैटू. गेंदा बेमन से प्रतियोगिता में सम्मिलित हुई थी. विपक्षी प्रतिभागी के रूप में बड़े ही आत्मविश्वास के साथ टैटू वाली लड़की ने बोलना शुरू किया.

टैटू आधुनिक पद्धति, रंग-बिरंगे मन-मोहक रंगों द्वारा इलेक्ट्रानिक सुईयों द्वारा किया जाता है जो बदलते फैशन की मांग है. यह हमारे व्यक्तित्व को और निखारता है वगैरह.... वगैरह..... खूब तालियाँ बजी. अब गेंदा की बारी थी. उसकी हथेलियाँ पसीने से भीग चुकी थीं. धड़कते दिल से वह मंच की ओर बढ़ी और माईक पकड़ कर अभिवादन मे 'जय जोहार' कहा. गेंदा कह रही थी, गोदना हमारी संस्कृति का हिस्सा है जो पारंपरिक श्रृंगार के साथ विशेष अंगो पर ही गोदा जाता है इसके चिकित्सकीय लाभ भी होते हैं. यह प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से तैयार की गई स्याही से बबूल के कांटो द्वारा गोदा जाता है. शरीर के विशेष एक्यूपंचर पाईंट पर स्याही से त्वचा पर पारंपरिक आकृतियाँ उकेरी जाती हैं. टैटू के समान इसके साइड इफेक्ट नहीं होते हैं. ना ही टैटू में प्रयोग किये जाने वाले हानिकारक केमिकल का प्रयोग होता है. यह कह कर गेंदा चुप हो गई. उसकी ऑंखें भर आईं. अचानक गेंदा चौंक गई, तालियों की गड़गड़ाहट से परिसर गूँज उठा. मंच से विजेता के रूप में गेंदा का नाम पुकारा गया. विजेता की ट्राफी लिये गोदना वाली गेंदा ससम्मान उतर रही थी. अपनी सांस्कृतिक विरासत पर शर्मिंदा नहीं वरन गर्व का भाव लिये 'गोदना वाली गेंदा'

# संजीवनी टीका

रचनाकार- अविनाश तिवारी

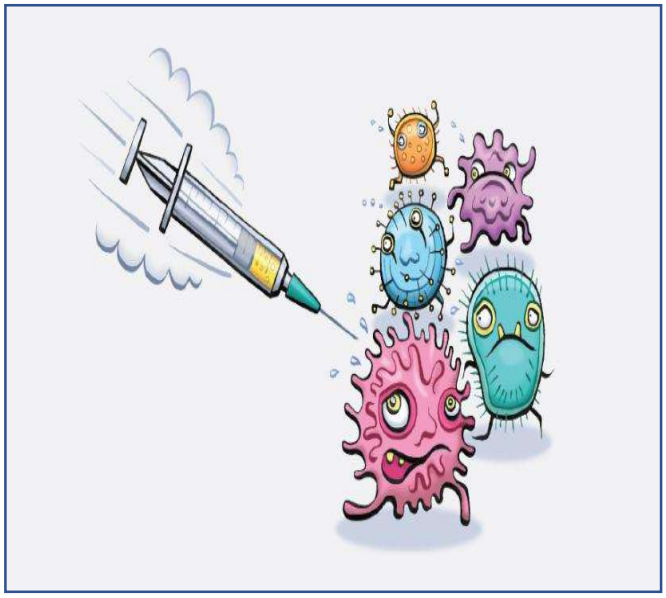

जन जन का सन्ताप मिटा,
मानवता का त्रास हटा.
संजीवनी देश में आई है,
बधाई श्रुशुत आपकी मेहनत रंग लाई है.

जंग लड़ेंगे अब विषाणु से,
जिसने हमको था थर्राया.
थकते कदम जो चले मीलों तक,
दर्द उनका बिसराया.

नहीं भूलेंगे इस काल को
बीता भयावह दुःस्वप्न था.
होगा कल सुनहरा सबेरा
जो अंधेरों में दफ्न था.

फिर लगेगें मेले, झूले
बागों में फिर रौनक होगी.
किलकारी से गूंजेगा स्कूल
न अपनों से दूरी होगी.

धन्य -धन्य वो वैज्ञानिक
जिसने प्रतिपल काम किया.
खोजा टीका इस कोरोना का
धरती का अभिशाप समाप्त हुआ.

स्वागत है आरोग्य तुम्हारा
जन जन में निवास करो.
सभी सुखी हों, सभी निरोगी
विश्व का प्रतिपल उद्धार करो.

# गीत मजे से गाता

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

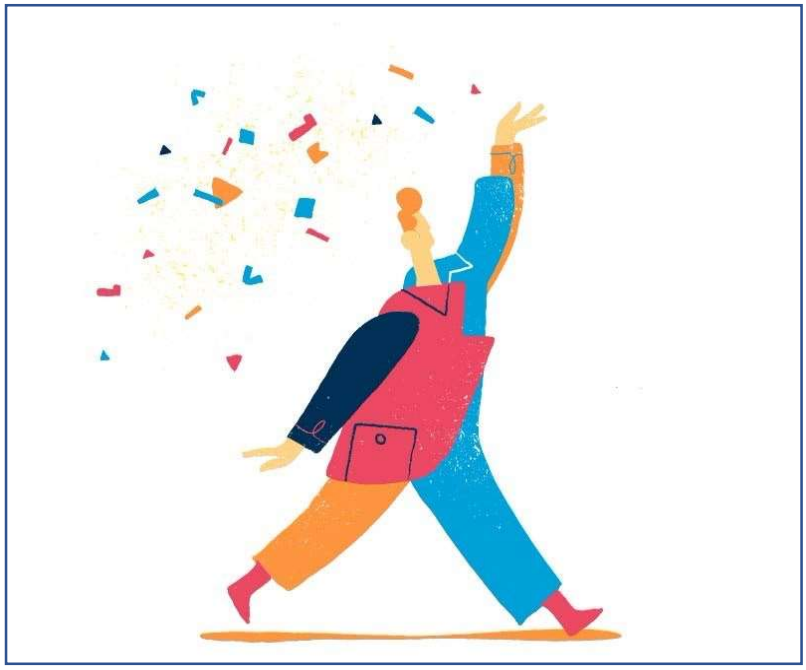

रोना-धोना, आलस करना
मुझे नहीं है भाता.
मैं हूँ सीधा-सादा बच्चा
गीत मजे से गाता..

छोटे-बड़े का भेद न जानूँ
समरस भाव जगाता.
हिंदू-मुस्लिम, सिक्ख सभी को
बढ़कर गले लगाता..

मुझे नहीं भाता है भाई
आपस में टकराना.
जाति-धर्म की खींच लकीरें
लड़ना और लड़ाना..

# नेकी करो

रचनाकार- कु कल्याणी दलेई, कक्षा बारहवीं, शा.उ.मा.वि. पहंडोर, दुर्ग

सोनपुर गाँव में दीनू नाम का एक बालक अपने माता पिता के साथ रहता था. वह सातवी कक्षा में पढ़ता था. दीनू बहुत संस्कारी बालक था,पढ़ाई लिखाई में बहुत अच्छा था,बड़ों का सम्मान करता था. यदि उसे रास्ते में कोई घायल जीव मिल जाए तो उसकी देखभाल करता था. स्कूल में बालं दिवस धूम- धाम से मनाने की तैयारियाँ चल रही थीं. दीनू बहुत खुश था. वह बालदिवस के दिन प्रातः स्कूल जा रहा था, तभी उसने रास्ते में एक बच्चे को देखा जिसके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था, वह बच्चा बहुत भूखा और बीमार था. दीनू को उस बच्चे पर दया आई. वह उस बच्चे को तुरंत अपने घर ले गया और उसे खाना खिलाया,पहनने के लिए कपड़े दिये. वह गरीब बच्चा बहुत खुश हुआ उसने दीनू को धन्यवाद दिया और दीनू से कहा कि जीवन में यदि कभी भी मुझे तुम्हारी सहायता करने का अवसर मिले तो मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करूँगा मित्र,ऐसा कहकर वह चला गया. दीनू को बहुत खुशी हुई फिर वह स्कूल गया.

कुछ महीने बीत गए, दीनू का जन्मदिन आया उसके माता - पिता उसे इस अवसर पर मंदिर ले गए.वे भगवान का आशीर्वाद लेकर घर लौट रहे थे तभी एक चोर दीनू की माँ के हाथ से उनका थैला छीनकर भागने लगा.उसी समय वह गरीब बच्चा जिसकी दीनू ने सहायता की थी, उसने चोर के हाथ से वह थैला छीन लिया.फिर उन्होंने उस चोर को पुलिस के हवाले कर दिया.

दीनू ने उस बच्चे को धन्यवाद कहा. इस पर उस बच्चे ने कहा इसकी कोई आवश्यकता नहीं है मित्र, पहले तुमने मेरी सहायता की थी और आज मैंने तुम्हारी सहायता की इस तरह हमें सबकी सहायता करनी है, यह बोलकर वह बच्चा चला गया.

# Near By Tree

Poet- Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

I was a day free,
Saw nearby tree,
A jumping monkey,
And walking donkey,
I was a day alone,
Saw a telephone,
Then I walked around,
And heard a sound.

# सुवा गीत

रचनाकार- स्नेहलता "स्नेह"

रोवत हवै छुप- छुप
मरत हवै तिल-तिल
फांसी ला बनावत हे गलहार,
न रे सुवा न, कर्जा मा बुड़े हे

किसान न रे सुवा न कर्जा...

बिहिनिया ले संझा जाँगर टोरे बिचारा
पेट पोंसइया अन्नदाता के नइ हे इहां कोनो सहारा,
चिरहा धोती पहिरे हे मरहा कस दीखत हे.
बिन पनही पांव ले बहे लहूधार
न रे सुवा न कर्जा म बुड़े हे किसान.

टूटे -फूटे नाँगर कइसे खेत म चलावव,
बईला बर भूसा-चारा कइसे ले बिसावव,
ठग डारिस जम्मो मन लबारी मार के
गहना धराय हे घर-कुरिया खेतखार
न रे सुवा कर्जा....

कभी सूखा, कभी बाढ़ ओला रोवाथे.
साहूकार सूद ले बर रात- दिन तंगाथे
बेंच डारे अन्नधन, बेंच डारे बरतन
आज हवै छेरछेरा तिहार
न रे सुवा....

# बच्चों ने बंजर धरती में आलू-भुट्टे उगाये

रचनाकार- आसिया फारूकी, फतेहपुर, उ. प्र.

सुबह सुबह राशिद बहुत खुश था. आज हमारी कक्षा में भुट्टे बाँटे जाएँगे. एक हफ्ते के इंतजार के बाद आज कक्षा 4 के बच्चों को भुट्टे मिलने का क्रम आया था. मारिया चुपचाप सब देखती रही. उसका नया नामांकन हुआ था. बड़ी मासूमियत से पूछने लगी, क्या इस स्कूल में भुट्टे भी उगते हैं ? दिलकश शान से बताने लगा, उगते नहीं हैं हम उगाते हैं.'' सभी बच्चे एक-दूसरे से अपने विद्यालय में उगी सब्जियों मूली, टमाटर, आलू-बैंगन, भुट्टों के विषय में बातकर खुश हो रहे थे. कोई कह रहा था कि हम बीज लाये थे. कोई बता रहा था कि हम रोज पानी, खाद, गुड़ाई करते थे. कैफ बोला, ''बकरियों से अगर मैं न बचाता तो क्या आज भुट्टे और आलू मिल पाते ? तभी उन सबकी चहेती माया दीदी (रसोइया) भुने हुए भुट्टे नमक लगाकर सभी को बांटने लगी. बच्चे बहुत खुश होकर भुट्टे खा रहे थे. मेरी आँखों में अतीत के चित्र गुजरने लगे. मेरा इस विद्यालय का पहला दिन जब प्रमोशन के बाद यहाँ पहला कदम रखा था. सब कुछ अस्त-व्यस्त था. आज भी आँखों के सामने वही मंजर, वीरान जंगल-सा विद्यालय परिसर घूम जाता है. सोचती थी इस बेजान धरती को सजीव कैसे बनाऊँ ? सभी बच्चों और रसोइयों को बुलाकर अपने इरादे के बारे में बताया तो रसोइयों ने कहा, ''काम तो अच्छा है पर आसान नहीं. सालों से यहाँ एक पौधा भी नहीं उगा. जमीन ही बंजर है.'' मैंने कहा, 'कोशिश करने में क्या हर्ज है, धरती को सजीव बनाना सीखना चाहिये.' पूरे परिसर में वर्षों से जमा कूड़ा जमकर सख्त

हो गया था. कूड़ा हटाने के लिऐ मैंने विभाग को कई बार अर्जी लिखी. फिर कुछ अभिभावकों को श्रमदान के लिये राजी किया. गाँव के कुछ लोग सहयोग हेतु आगे आए. एक हफ्ते तक परिसर में जुताई का कार्य चला. हमने और बच्चों ने खुद मेहनत करके सारी गंदगी साफ की.मैं यही बोलती रही, ''ये परिसर हमारा है, इसे साफ सुथरा हरा-भरा बनाना हमारा फर्ज है.'' कुछ दुष्ट लोग अभी भी विद्यालय में कूड़ा डालते, ईंट, पत्थर चलाते जिससे हम सभी परेशान थे. तब हमने नन्हे बच्चों की एक 'ग्रीन आर्मी' तैयार की जो आसपास के लोगों को ऐसा न करने और साफ-सफाई के लिये जागरूक करती. कुछ असामाजिक लोगों को हमारा काम अखर रहा था और वे हमें विद्यालय छोड़ने की धमकियाँ भी दे रहे थे. पुलिस प्रशासन की मदद से उनपर रोक लगाई गई. इस बदलाव को देख लोग जुड़ने लगे. मैं उन्हें यही समझाती कि विद्यालय हमारे बच्चों का भविष्य है. इसमें आप साथ देंगे तो हम बेहतर कर पाएँगे. मैं स्कूल को सँवारने में जी जान से जुट गई. बच्चे किसी को कुछ करते हुए देखने के बाद अपने हाथों से करके सीखते हैं. तो रोज सुबह मैं बच्चों से कहती, ''चलो बच्चो काम शुरू करें.'' बच्चे खुरपी, फावड़े और कुदालें ले आते. अभिभावक शमीम चाचा किसान थे, वो जब भी विद्यालय में आते उन्हें देखकर बच्चे खुश हो जाते क्योंकि वे बच्चों को खेती बाड़ी के तौर-तरीके बता जाते. बच्चों में उत्साह जाग जाता. उनकी देखादेखी खाद छिड़कते, कतारें बनाते, निराई-गुड़ाई करते. बच्चे पसीने से तरबतर हो जाते पर रुकते नहीं.

मैदान के पीछे का हिस्सा जहां गाँव के लोग कई वर्षों से कूड़ा डाला करते थे. डंप होकर पहाड़ नुमा हो गया था. मैंने सोचा ये भी साफ कर लूँ तो इतनी जमीन और निकल आएगी.बच्चों के लिये सब्जियाँ उगाई जा सकेंगी. पर उसे साफ करना काफी कठिन काम था. नगर पालिका में अर्जी पर अर्जी लगाती रही. एक दिन सफाई कर्मी आये और कूड़ा देख कर घबरा गये, बोले मैडम ये तो पंद्रह दिन से कम में नहीं हो पायेगा. काम शुरू करवाया. बच्चे और अभिभावक भी साथ लग गये. धीरे-धीरे जमीन साफ होती रही और उससे निकलने वाली ईंटों से हमने क्यारियां बना लीं. कूड़े वाली जमीन के साफ होते ही आमिर अपने पापा को बुला लाया जो मिट्टी डालने का काम करते थे. उनके सहयोग से बच्चों ने क्यारियों में उपजाऊ मिट्टी डाली. अगली सुबह बच्चे मेरे पास आए, वे अपने-अपने घर से अंकुरित आलू लेकर आए थे. बोले कि घर वालों ने बोने के लिए दिये हैं. चांदनी ने उन आलुओं को टोकरी में जमा किया. क्यारियाँ तो पहले ही तैयार थीं. बच्चों ने कतारों में बीज बो दिए. समय समय पर खाद पानी डालते रहे. उस दिन तो बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं था, जब गाँव के कुछ सहयोगी लोग अमरुद, टमाटर, नींबू, गुलाब, बेला और एलोवेरा के पौधे लेकर स्कूल पहुँचे. उनको भी उचित जगह पर रोपा गया. जल्दी ही पौधे बड़े होने लगे. बच्चे अपने नन्हें हाथों से बोये बीजों को पहली बार धरती की कोख से बाहर झाँकते, पनपते देख रहे थे. यह आनंद अनूठा था. फसलें बढ़ती रहीं और बच्चों के सपने भी.

आलुओं की फसल जब पक गई तो खुदाई का दिन तय हुआ. बच्चों ने अपनी अपनी क्यारियां बाँट लीं. खुरपी से वो खोदते जाते और मुझे दिखा-दिखा कर खुश होते. मजाल है जो इस कार्य में कोई कोताही हो जाए. कोई आलुओं को बीन रहा था, कोई धोकर टोकरी में रखता जाता. अरशद, माया दीदी से आलुओं के परांठे बनाने की फरमाइश कर रहा था तो नेहा चिप्स बनाने की जिद कर रही थी. कितने प्यारे लग रहे थे ये सब. और सैफ तो आलुओं से भरी टोकरी सिर पर रखकर 'आलू ले लो आलू' आवाजें लगाता घूम रहा था, सारे बच्चे खिलखिला कर हँस पड़े. सलोनी दौड़ती हुई मेरे पास आयी और बोली मैम आज की सब्जी बहुत स्वादिष्ट बनी है. अयान बोल उठा 'अरे जानती नहीं कि यह सब्जी विद्यालय में उगे आलू-टमाटर से बनी है.' तभी लंच की घण्टी बजी और मैं यादों से बाहर निकली. बच्चे चेहरों पर खुशी ओढ़े लंच के लिए भोजन कक्ष की ओर बढ़ रहे थे.

# कुहासा

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

जब छा जाए कुहासे की चादर,
और आये न कुछ नज़र.
हे कृपानिधि राह दिखाना,
तुम सुनहरी धूप बनकर.

जब कभी मेरे कदम डगमगाए,
दुख खड़े हो घेरकर.
आस दीप जला देना मन में,
दुबक जाए वो डरकर.

छँट जाएगी ये धुंध घनी भी,
हो तुम्हारी कृपा अगर.
तिमिर नहीं ठहर पमें एक पल,
रोज सुबह जब आता दिनकर.

# जड़काला

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

जड़काला के दिन जब आथे
गोरसी ह तो गजब सुहाथे.

कन-कन करथे तरिया-नदिया
रौनिया ह तो मन ला भाथे.

जुन्ना कथरी अउ कमरा हर
हितवा बन के जाड़ भगाथे.

अब के पाहरो नवा जुग मा
साल-स्वेटर ह मन ललचाथे.

रात हर बैरी कस लागथे
नवा सुरुज हर प्रीत निभाथे.

# करनी का फल

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

ताँदुला नदी के किनारे एक बहुत बड़ा वृक्ष था. वृक्ष पर कई तरह के पक्षी रहते थे. सभी पक्षियों की एक-दूसरे से खूब मित्रता थी. एक दिन सुबह सभी पक्षी अपने बच्चों को छोड़कर भोजन की तलाश में निकल पड़े. बच्चे मजे से खेल रहे थे. उन्हें बड़ा मजा आ रहा था. खेलते हुए बच्चों पर एक कौए की नजर पड़ी. बच्चों के नन्हें व कोमल अंगों को देखकर कौए के मुँह में पानी आ गया. वह वृक्ष की डाल पर जाकर बैठ गया. कई बच्चों के कोमल अंगों से अपनी भूख मिटायी; तो कई को नोंच-नोंच कर मार डाला. पक्षियों के घोसलों को उजाड़कर उनके आने से पहले ही वह वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया.

शाम को जब पक्षी वृक्ष पर वापस आए. वृक्ष पर अपने बच्चों को न पाकर वे परेशान हो गए. अस्त-वयस्त घोंसलों को देखकर उन्हें परिस्थिति समझने में देर न लगी. सभी पक्षी फूट-फूटकर रोने लगे. वृक्ष पर मातम छा गया.एक तोता पक्षियों को बिलखते देख वृक्ष पर आया. रोने का कारण पूछा. पक्षियों ने तोते को घटना की पूरी जानकारी दी. तोता पक्षियों को धीरज बंधाते हुए कहा- 'मित्रों! जो हो गया सो हो गया. व्यर्थ आँसू बहाने से कोई फायदा नहीं. दुश्मन ने तुम सबकी आँखों में धूल झोंककर अपना उल्लू सीधा किया है. वह कभी न कभी फिर आएगा. उसे सबक सिखाने के लिए कमर कसकर तैयार रहो.'तोते की बात सुनकर एक पक्षी सिसकते हुए बोला- 'अब हम यहाँ नहीं रह सकते. यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है. हम सब कल अन्यत्र चले जाएँगे.'जवाब में तोते ने कहा - 'तुम सब हिम्मत क्यों हार रहे हो? यह तो कायरता हुई. इससे दुश्मन का साहस और बढ़ जाएगा.अपनी मातृभूमि को त्यागना भी अच्छी बात नहीं

है.'तोते की बात सुनकर पक्षियों का मुखिया तोते से कहने लगा- 'आपका कहना बिल्कुल उचित है.जैसा आप कह रहे हैं, हम सब वैसा ही करते हैं. हम यहाँ से कहीं नहीं जाएँगे.'कुछ समय पश्चात तोता उड़ गया.

लगभग साल भर बीतने के बाद कौआ उसी वृक्ष पर आया; और एक डाल पर बैठ गया. इस बार कौआ अपनी हरकतें शुरू करे, इससे पहले ही सभी पक्षी उस पर टूट पड़े. पक्षियों ने अपनी एकता का परिचय देते हुए कौए को चोंच और पंजों से नोच-नोचकर अधमरा कर दिया. रक्तरंजित कौआ वहाँ से भाग पाने में असमर्थ रहा. लड़खड़ाते हुए कौए का शरीर जवाब देने लगा. वह दर्द से कराहने लगा. कौए को मदद की आवश्यकता थी; पर उसकी मदद करने कोई नहीं आया.

कौए को आकाश में उड़ता हुआ तोता दिखाई दिया. मदद के लिए आवाज लगाई- 'ओ तोता भैया! कृपया मेरी सहायता करें. मेरे प्राण बचा लो. मुझे बचा लो...बचा लो.'कौए की हालत देखकर तोते को उस पर दया आई; समीप जाकर पूछा कि तुम्हारी यह हालत किसने की है. फिर कौए ने तोते को पूरी बात बताई. कौए की बात सुनकर तोते को पक्षियों के साथ घटी घटना याद आ गयी. उसका खून खौल उठा,तोता कौए पर बरसते हुए बोला - 'अरे मूर्ख! तुमने पक्षियों के साथ जो किया है, वह क्षमा योग्य नहीं है. किसी की शांति भंग करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है. पक्षियों ने तुम्हारे साथ बिल्कुल उचित किया है. तुम इसी लायक हो. अगर तुमने उनके साथ मित्रता का हाथ बढ़ाया होता तो तुम्हारी यह दशा नहीं होती. तुम जैसे गद्दार के लिए मैं कुछ नहीं कर सकता', कहकर तोते ने अपनी राह पकड़ ली. दर्द से कराहते हुए कौए को अपनी करनी पर पश्चाताप हो रहा था. अंततः उसकी साँस की डोर टूट गयी.

# बूढ़ी माँ

रचनाकार- सोमेश देवांगन

मैं बीमार लाचार घूम रही हुं बाजारों में.
फ़ोटो मेरी रोज मिल जाती अखबारों में..

डाल मेरी फ़ोटो खूब अखबारों में फैलाई है.
ठंड इतनी है पर किसी ने नहीं दी रजाई है..

दिन भर मांगती भीख में बेटा थोड़ा और खाना.
शाम होते ही थककर रास्ते में है सो जाना..

घर परिवार रहते हुए भी हुं मैं सबसे बेगाना.
कलयुग तो यही है इसी का है देखो जमाना..

बच्चों को पढ़ा लिखाकर के काबिल बनाया.
उन बच्चों ने ही मुझको आज ठुकराया..

हे माँ दुर्गा ये कैसी विपदा है मुझ पर आई.
भक्ति में मेरी क्या कमी है जो दुख बरसाई..

मै तो माँ बच्चों कि अब आह नही दे सकती.
माँ आशिर्वाद है मेरी उमर भी बच्चों को लगती..

# उड़ी पतंग

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

उड़ी पतंग देखो,
मेरी उड़ी पतंग.

रंग-बिरंगे देखो आसमान में,
लगा हैं ताता आसमान में
देखो दूर -दूर से,
ऊंची गगन को छूने चली पतंग.
चली गगन को चुमने मेरी पतंग.

उड़ी पतंग देखो
मेरी उड़ी पतंग.

चलो खेले पतंग का खेल
डोर थामे लेकर पतंग.
डोरे से काटो पतंग.
रंग-बिरंगे विचित्र पतंग.

उड़ी पतंग देखो
मेरी उड़ी पतंग

देखो डोर का खेल,
कट गया डोरे से पतंग.
उड़ गया दूर पतंग,
देखो गगन में पतंग का खेल.

उड़ी पतंग देखो
मेरी उड़ी पतंग

तन -मन में मस्ती और उमंग
सब मिलकर उड़ाएं पतंग
भर दे गगन में रंग- बिरंगा पतंग.

देखो उड़ी पतंग
देखो मेरी उड़ी पतंग.

# सोनू की पायल

रचनाकार- अनिता चंद्राकर

सोनू को लंबे बाल पसंद थे, उसे रंगबिरंगी चूड़ियाँ पहनना बहुत भाता था. घुँघरू वाली पायल पहनकर छमछम बजाने का मन करता था. सभी लड़कियाँ ऐसा ही तो करती हैं. पर सोनूकी इच्छा पूरी नहीं हो पाती थी. पिताजी उसके बाल कटवा देते थे और उसे लड़कों की वेशभूषा में रखते थे. कभी कभी वह माँ से दुपट्टे की दो चोटी बनवाकर अपनी इच्छा पूरी करती थी. उसका कोई भाई नहीं था. पिताजी को बेटे की लालसा थी, इसीलिए वे सोनू को लड़कों की तरह कपड़े पहनाते थे. पर सोनू का मन कुछ और ही चाहता था. सुंदर सुंदर फ्रॉक,रंग बिरंगी चूड़ियाँ और तरह तरह की क्लिप देखकर उसका बालमन ललचा उठता था. दादाजी उसके मासूम मन को पढ़कर दुखी हो जाते, पर उनकी भी नहीं चलती थी.एक बार सोनू ने दादाजी से कहा, " दादू मेरे लिए पायल ले दो न, मैं उसे पहनकर छम छम नाचूँगी. दादाजी सोनू को सुनार के पास लेकर गए और उसके नाप की घुँघरू वाली सुंदर पायल खरीदकर पहना दी. सोनू पायल पहनकर बहुत खुश हुई,और नाचने लगी. अब उसे पिताजी का डर नहीं था.सोनू की खुशी देखकर दादाजी का मन भी ख़ुशियों से भर गया. दादाजी के लिए सोनू की खुशी अधिक महत्वपूर्ण थी.

# जीए भारत देश मेरा

रचनाकार- प्रतिभा त्रिपाठी

जीए भारत देश मेरा,
जीए भारत देश मेरा.
तीन रंगों से सजा तिरंगा मेरा.

सारे जग से न्यारा है,
यह तिरंगा प्यारा है.
देश के वीर जवानों ने,
तिरंगे की शान बढ़ाई है..
जीए भारत देश...

वीरों ने बलिदान दिया,
अंग्रेजों को मार भगाया.
तब जाकर हमनें,
यह तिरंगा फहराया है..
जीए भारत देश...

गली-गली फहराकर तिरंगा,
भारत की शान बढ़ाएंगे.
झंडा ऊंचा रहे हमारा,
यही गीत सदा दोहराएंगे..
जीए भारत देश....

तिरंगे में तीन रंग को,
अपने जीवन में भरना है.
केसरिया रंग साहस का,
श्वेत रंग सच्चाई का..
जीए भारत देश...

हरा रंग हरियाली लाता,
जन-जन में खुशहाली भरता.
नील गगन में फहराओं तिरंगा,
लहर-लहर लहराओं तिरंगा..

जीए भारत देश मेरा, जीए भारत देश मेरा
तीन रंगों से सजा तिरंगा मेरा..

# गणतंत्र तिहार

रचनाकार- सपना यदु

सुनो जी संगी, सुनो संगवारी,
आगे हमर गणतंत्र तिहार.
मुस्काथे गांव, गली अऊ फुलवारी,
संग में झूमथे धरती अऊ आकाश..

सब सरकारी भवन म,
लहराही हमर तिरंगा.
दीही संदेश शांति के,
नई करन कभु दंगा..

भुला के जात पात के भेद ला,
नई करन कभु लड़ाई.
मिलजुल के संग मा रबो,
हिंदू मुस्लिम भाई -भाई..

देश के रक्षा खातिर जेमन,
झेलीन गोली के बौछार ला.
करत हन शत -शत नमन,
भारत के अइसन पहरेदार ला..

# नटखट नन्ही

1. नन्ही: - पापा मेरे फोन को किसी अच्छे डेंटिस्ट को दिखाना है?
   पापा:- अरे, पर क्यों?
   नन्ही:- क्योंकि फोन का ब्लूटूथ काम नहीं कर रहा है.

2. टीचर ने साइंस लैब में अपनी जेब से एक सिक्का निकाला और एसिड में डाला, फिर नन्ही से पूछा:- बताओ कि ये सिक्का घुल जाएगा या नहीं?
   नन्ही:- सर नहीं घुलेगा...
   टीचर:- शाबाश... लेकिन तुम्हें कैसे पता?
   नन्ही:- सर अगर एसिड में डालने से अगर सिक्का घुलता तो आप सिक्का हमसे मांगते, ना कि अपनी जेब से निकालते..

3. टीचर नन्हीसे बहुत परेशान थी
   टीचर:- नन्हीअपना बैग से सारी किताबें निकाल
   नन्ही:- निकाल ली मैडम
   टीचर:- ये किताब किसकी है ?
   नन्ही:- कागज की है
   टीचर:- ये तो मुझे भी पता है कागज की है
   नन्ही:- तो फिर पूछ क्यों रही हो

4. पिता जी :- रिजल्ट कैसा रहा तुम्हरा...
   नन्ही :- मास्टर साहब कह रहे थे एक साल और लग जायेगा तुम्हे इस क्लास मे...
   पिता जी :- नन्ही चाहे दो - तीन साल लग जाये लेकिन फेल ना होना...

5. नन्ही :- अगर प्रिंसिपल सर ने अपने शब्द बापस नही लिए तो मैं स्कूल छोड़ दूंगी
   राजू :- क्या खा प्रिंसिपल सर ने?
   नन्ही:- कहा था, स्कूल छोड़ दो

# जाने कहाँ गये वो दिन

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

जाने कहाँ गये वो दिन भी,
कभी हँसकर निकल जाते.
छोटी छोटी बातों में भी,
खुशियाँ ही खुशियाँ लाते..

माँ के हाथों चूल्हे की रोटी,
धीमी घी की सुगंध आती.
दौड़कर सभी आते बच्चें.
सबको भूखन लग जाती..

जाने कहाँ गये वो दिन भी,
चूल्हे में दूध पकाती.
मलाई देख हम सारे के,
मुँह से लार टिपक जाती..

जाने कहाँ गये वो दिन भी,
लकड़ी की आँचे आती.
बातें करते साथ बैठ कर,
सारी ठंडी भग जाती..

बहुत याद आती उस पल की,
नही मिलता देखने को.
खो गये अब आँच लकड़ी के,
मिले न हाथ सेंकने को..

# हिन्दी

रचनाकार- योगेश ध्रुव "भीम"

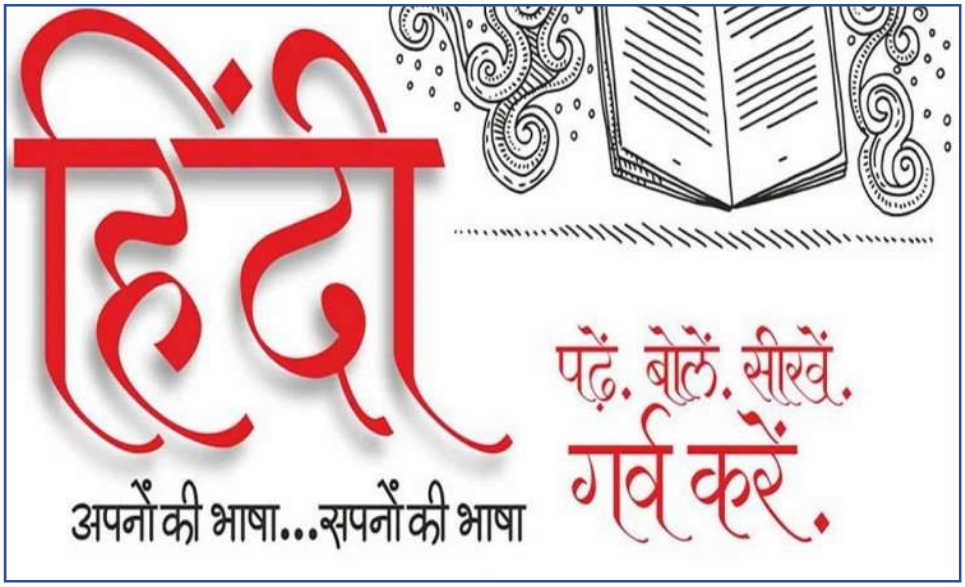


संस्कारो की ये भाषा,
है भाल सजी बिंदी,
माँ भारती की शान है,
दिल की धड़कन हिन्दी..

कबीर मीरा तुलसी की,
हर पद में समाए हिन्दी,
हिन्दी पुत्र सम्राट मुंशी,
ये निशदिन मान बढ़ाए..

समरसता एकता की,
सभी को घूंट पिलाती,
जनगण मन सद्भावना,
ये नित सम्मान दिलाती..

रविस है ओज तुम्हारी,
हे हिन्दी ! ये वसुंधरा में
सौंदर्यता आलंकारिक,
व्याकरण मान बढ़ाती..

विश्व भ्रमण कर हर पल,
भारती गौरव गाण गाती,
मेरी रंग में बसती, हिन्दी,
निज मान याद दिलाती..

टेक्नोलॉजी ने परखा है,
आज हिन्दी की गुणवत्ता,
ये गूगल की भाषा बनकर
नित काज सुगम बनाती..

राम, रहीम, ईशा, गुरुसाहेब,
ये हिन्दी की है चन्दन वंदन,
जनगण मन की भाषा बनकर,
नित सदमार्ग प्रशस्त कारती..

# नवाचार

रचनाकार- शालिनी पंकज दुबे

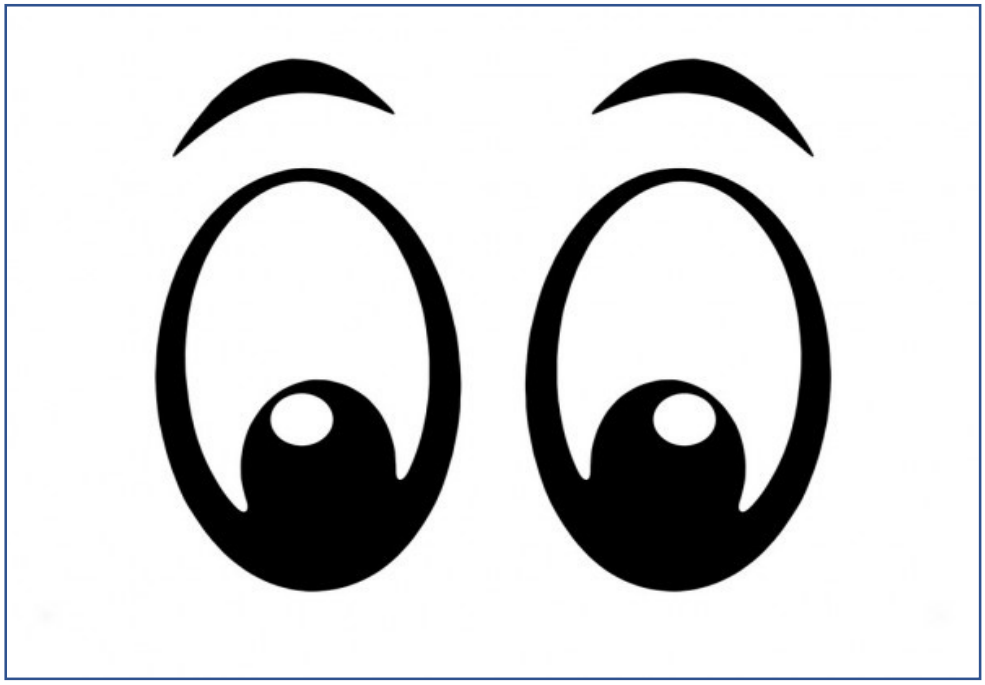

ये जो हमारी आँखे है न! ये हमें बाहरी दुनिया से जोड़ती है. यही वजह है कि हम उलझनों में उलझते हैं ;फँसते हैं और चाहकर भी हम खुद को कभी नहीं देख पाते. देखते हैं तो बस बाहरी दुनिया को, बाहर की बुराइयों को, अच्छाइयों को, सब को, पर खुद से दूर हो जाते हैं. ये आँखों का सफर बाहरी दुनिया के लिए है. पूरी जिंदगी बीत जाती है लोग तमाम अटकलें लगाते हैं हमारे स्वाभाव को लेकर, पर सच तो ये है शरीर के इस पिंजरे में हम अपनी आत्मा से कभी रूबरू ही नहीं हो पाते. यही वजह है कि सिर्फ मन्दिर में ही नहीं,हम जब भी अपने ईष्ट को याद करते है तो आँखे स्वतः बंद हो जाती है. ध्यान की मुद्रा में हमने बुद्ध को देखा है न जाने कितने ऋषि, मुनि, तपस्वी सभी आँखे बन्द कर ध्यान लगाते हैं. मतलब एक ऐसा सफर, जो मन से अन्तर्मन तक जाती है. आत्मा, परमात्मा से मिल जाती है. हालाँकि विरले ही हैं जो इस सफर से अपने मुकाम तक पहुँचे, क्योंकि सोच हर कोई लेता है ;पर लग्न सच्ची हो तभी सफलता मिलती है.

आज हमारे नायक में अपनी सफलता की कहानी लेकर आये हैं बेमेतरा जिले के बावा मोहतरा स्कूल से एक होनहार बच्चा दुर्गेश जी, जो कि कक्षा आठवीं का विद्यार्थी है. सच कहूँ तो आज मेरी कलम धन्य हुई इस प्यारे से बच्चे के बारे में लिखने का अवसर मिला. दुर्गेश जी से बातचीत के दौरान कहीं से भी नहीं लगा कि वो अपनी आँखों से दुनिया को नहीं देख पाते. इतने सारे बच्चों से मेरी बात हुई पर दुर्गेश जी सबसे अलग, आत्मविश्वास से भरपूर. हिंदी उनका मन पसंद विषय है. देवांगन मैडम इनकी प्रिय शिक्षिका है, जो हर तरह से दुर्गेश की पढ़ाई में मदद करती है. दुर्गेश की अपनी मित्र मंडली है.

समावेशी शिक्षा के अंतर्गत बेमेतरा में BRP(द्वारा CWSN) द्वारा स्कूल सपोर्ट किया जाता है. दुर्गेश को स्कूल सपोर्ट के तहत ब्रेल स्लेट एवं स्टाइलस (ब्रेल शिक्षण सामाग्री) द्वारा 6 बिंदुओं से बनने वाले अक्षरों का अभ्यास कराया गया. दुर्गेश को घर से पालकों का व स्कूल में शिक्षकों का भरपूर सहयोग मिलता है. ब्रेल लिपि का परिचय शिक्षक व पालकों को भी कराया गया ताकि दुर्गेश को जरूरत पढ़ने पर घर से भी मदद मिले. हिंदी, अंग्रेजी, गणित के नम्बरों को याद करवाना,तथा ब्रेल अंकों का अभ्यास पढ़कर, लिखकर सिखाया जाता है.

चुनौतियाँ बड़ी तो होती है, पर अटल इरादों के सामने वो स्वमेव बौनी हो जाती है. यही वजह है कि कुछ कठिन अक्षरों का उच्चारण करने, लिखने में समस्या आती है तो दुर्गेश जी उसका लिखकर अभ्यास करते है. शिक्षण कार्य व दैनिक कार्य में उसकी रुचि का ध्यान भी रखते हुए बौद्धिक क्षमता के विकास पर ध्यान दिया जाता है. दुर्गेश जी बहुत मेहनती है. वे प्रतिदिन पढ़ने लिखने का अभ्यास करते है. बी.आर.पी. श्रीमती रजनी देवांगन मैडम का स्नेह और सीख की मदद से दुर्गेश जी बहुत मन लगाकर पढ़ाई कर रहे हैं.

दुर्गेश जी से बात कर यही लगा कि आँखे हो या न हो सपने होना जरूरी, सपने देखना जरूरी है,और उन मजबूत इरादों का होना भी जरूरी है जो भीड़ से हमें अलग पहचान दे.

अपने घर का सबसे छोटा बच्चा व लाडला दुर्गेश जी है. एक इच्छाशक्ति मैंने महसूस किया दुर्गेश जी के अंदर, गजब का आत्मविश्वास व मजबूत इरादें! ये सब गुण है इनके अंदर, जो उनकी अपनी मेहनत के हैं. ये गुण अगर किसी के अंदर हो तो वो अजेय होता है. हम सब माध्यम ही तो बनते हैं, पर ऐसे बच्चे अपनी कलम से अपनी तकदीर स्वयं लिखते है. सच कहूँ तो वो देश वो राज्य और वो शहर किस्मतवाला है जहाँ ऐसे होनहार हो, जो किसी फिल्मी हीरो को नहीं बल्कि भारत के वीर सपूतों को अपना आदर्श माने व उनसे प्रभावित हो.

'पढ़ई तुंहर दुआर' हमारे शिक्षा विभाग की इस योजना के तहत बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखने के लिए बहुत अच्छे- अच्छे कार्य किये जा रहे हैं. बच्चों के साथ शिक्षकों के लिए भी एक वरदान की तरह है. क्या कभी किसी ने कल्पना की थी कि एक दिन उन्हें हमारे नायक के रूप में पढ़ा जाएगा. वो जो बिना किसी प्रतिस्पर्धा के, सिर्फ अपने कर्तव्यों को निभा रहे है. सच कहूँ तो ये उन सभी के अच्छे व परमार्थ का फल है कि दुर्गम इलाकों से भी हमारे नायक आ रहे हैं. छत्तीसगढ़ का ऐसा कोई प्रान्त नहीं जहाँ आज ये शिक्षा की ज्योत प्रज्जलवित न हो रही हो इस कोरोना काल में. हमें किसी अन्य के उदाहरण लेने की जरूरत नही. दुर्गेश जैसे विद्यार्थी एक मिशाल है जो अपनी लगन व दृढ़इच्छाशक्ति से पढ़ रहे है. यूँ तो लक्ष्य की तलाश करते तक,, इंटर तक पढ़ जाते है पर दुर्गेश जी का लक्ष्य भी निर्धारित है. बातचीत के दौरान जब दुर्गेश जी ने कहा! "मैं कलेक्टर बनना चाहता हूँ." ये सुनकर बस दिल से दुआ निकली और मैंने शुभकामनाएं दी. सच कहूँ, तो उस आत्मविश्वास भरी बात में ;वो मजबूत इरादें की झलक देखी है. यकीनन एक बेहतरीन मुकाम तक दुर्गेश जी पहुँचेंगे.

# सपने

रचनाकार- महेन्द्र देवांगन "माटी"

मिल बैठे थे हम दोनों जब, ऐसी बातों बातों में.
बंद नयन के सजते सपने, झाँक रही हैं यादों में.

तू है चंचल मस्त चकोरी, हरदम तू मुस्काती है.
बज उठे दिल की सब तारें, कोयल जैसी गाती है..

पायल की झंकार सुने हम, खो जाते हैं ख्वाबों में.
बंद नयन के सजते सपने, झाँक रही हैं यादों में..

पास गुजरती गलियों में जब, खुशबू तेरी आती है.
चलती हैं जब मस्त हवाएँ, संदेशा वह लाती हैं..

उड़ती तितली झूमें भौरें, सुंदर लगते बागों में.
बंद नयन के सजते सपने, झाँक रही हैं यादों में..

कैसे भूलें उस पल को जो, दोनों साथ बिताये हैं.
हाथों में हाथों को देकर, वादे बहुत निभाये हैं..

छोड़ चली अब अपने घर को, रची मेंहदी हाथों में.
बंद नयन के सजते सपने, झाँक रही हैं यादों में..

मिल बैठे थे हम दोनों जब, ऐसी बातों बातों में.
बंद नयन के सजते सपने, झाँक रही हैं यादों में..

# बेरोजगारी

रचनाकार- सोमेश देवांगन

आठवी पास मन नेता बनय उड़ावत हवय हसीं.
पड़े लिखे बेरोजगार होंगे नई बनत हवय चपरासी..

घर बेचिस खेत खार बेचिस कराइस अउ पढ़ाई.
नउकरी के आश नई हे घर म होवत रोज लड़ाई..

इंजिनियर बनहि मोर लइका ढिढोरा ल तय पिटे.
गाँव गली खोर घर घर इंजिनियर डिग्री टँगे लिखे..

सरम के मारे नई करत हवय जी कोनो घर के काम.
गली खोर किंजरत हवय नई लगय सुबह अउ शाम..

करम ल बिकट ठठावट हे काबर बनेव मय इंजीनियर.
नौकरी तो मिलत नही हवय डाटा हवय जी क्लियर..

सरकार घलो आँखी ल मूंदे बेरोजगरी के मजा ल लुटे.
निकाल के वेकेंसी फार्म भरवा के घर म हवय चुप सुते..

# लकड़हारा

रचनाकार- विनीता एक्का, कक्षा पांचवीं

एक गांव में एक लकड़हारा और उसकी पत्नी रहते थे. वे लोग बहुत लंबे समय से एक साथ रहते थे. लेकिन अब वे बूढ़े हो चुके थे. एक दिन लकड़हारा जंगल में लकड़ी काटने गया और वह रास्ता भटक गया और एक झरने के पास पहुँच गया. उसको बहुत प्यास भी लगी थी. उसने जैसे ही झरने का पानी पिया, वैसे ही वह बीस साल का जवान हो गया. वह समझ गया कि वह जवानी का झरना था. लकड़हारा खुशी- खुशी अपने घर को आया लेकिन उसकी पत्नी ने उसको नहीं पहचाना. जब लकड़हारा ने उसे सारी बात बताई तब उसकी पत्नी ने जवान होने की इच्छा की और झरने की तरफ भागी. लकड़हारे ने जवानी के झरने तक अपनी पत्नी का पीछा किया परंतु उसे वह वहाँ नहीं मिली उसे वहाँ केवल एक छोटी सी बच्ची मिली. उसने सोचा कि मेरी पत्नी ने झरने का ज्यादा पानी पी लिया है और छोटी सी बच्ची बन गई है. लकड़हारे ने उस बच्ची को घर ले आया और दोनों फिर से बहुत लंबे समय तक खुशी-खुशी रहने लगे.

# ऋतु बसंती

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

ऋतु बसंत का दौर, देख छायी हरियाली.
करते कोयल शोर, बौर भी लगती डाली..
पीले पीले रंग, सभी मोहित है होते.
सरसों का है फूल, खेत में इसको बोते..

हरा भरा चहुँओर, लगे गेहूँ की बाली.
करते पक्षी शोर, बैठती डाली डाली..
खुशियाँ चारो ओर, मोरनी पँख फैलाती.
तोता मैना रोज, बाग में वह इठलाती..

पुष्पों की मुस्कान, सभी के मन को भाती.
करे बसंती शोर, हवायें सर सर आती..
खिलते फूल पलाश, मनो को लगता प्यारा.
होली बनते रंग, खेलते हैं जग सारा..

# <u>कामचोर भिखारी</u>

रचनाकार- सोमेश देवांगन

दे दे मालिक राम के नाम से भीख.
काम चोर मैं यही काम लागे ठीक..

मिल जाये थोड़ा चावल और पैसा.
बिना मेहनत के है ये बिजनेश जैसा..

ना मै अपंग हु न हु बूढ़ा और बीमार.
काम चोर की बीमारी से हु मै लाचार..

धरे कटोरा जाता मैं घर और दुकान.
पैसा चावल या खाने का मिले समान..

जब कोई घर नई देता मेरे को भीख.
गाली बद्दुआ से निकलवा लेता ठीक..

मिले जो चावल उसको बेचूँ बाजारों में.
मुझ जैसा काम चोर पड़े है हजारों में..

पैसा होने से शाम को मैं पिता दारू.
अपना बिजनेस रोज ढंग से चले सुचारू..

# दुनिया ये स्थिर

रचनाकार- ऋषि गर्ग, ग्वालियर

खुद में मैं ना कैद रहता
सब सुनता थोड़ा सा कहता
बड़े साहब का ज़ुल्म ना सहता
नदियों सा तेज़ मैं बहता
पर्वतों को चीर के कहता
मैं बेखौफ बेमिसाल हूं
गलतियों के मैं खिलाफ हूं
गलत करू तो ना माफ हूं
पर तैश में खुद को भाप लू
निशान खुद का मैं भी दाग दूं
धुंधला नहीं, मैं खुद में साफ हूं
ऋषि गर्ग नाम है मेरा
दुनिया ये स्थिर, अकेला मैं काफ हूं

# अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

## मोहन की मुश्किल

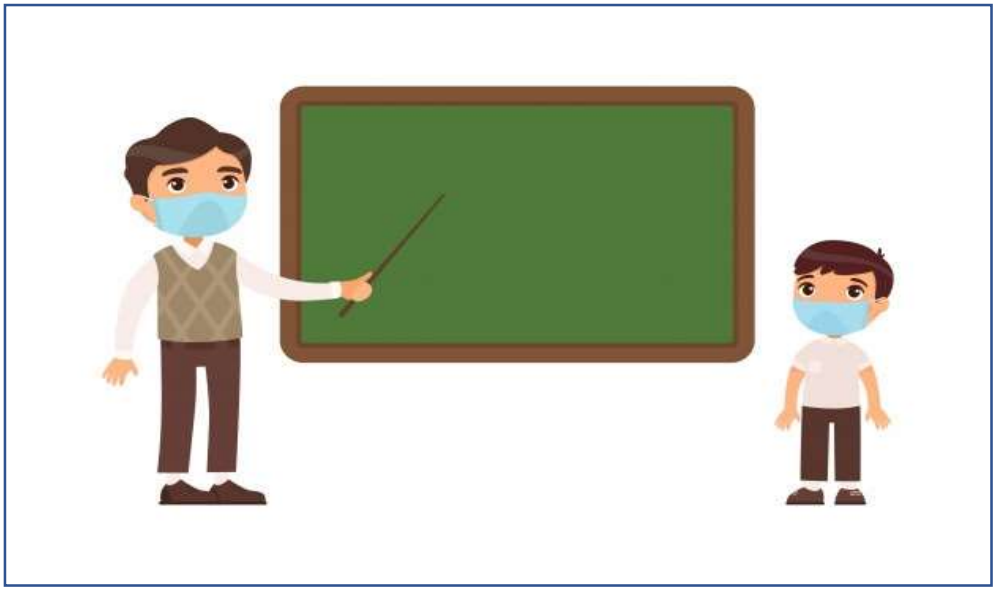

आज तो यह तय था कि मोहन को हिन्दी के गुरूजी से डाँट खानी पड़ेगी. बात यह थी कि मोहन लगातार तीन दिनों से अपना होमवर्क पूरा नहीं कर रहा था. उसने अपने दोस्तों से पूछा कि क्या उन सब ने अपना -अपना होमवर्क पूरा किया है ? सभी बच्चे हिंदी का होमवर्क गुरूजी से डर के कारण हर दिन पूरा करके आते थे. मोहन हिंदी में कमज़ोर था,उससे मात्राओं में बहुत गलतियाँ होती थीं. वह इसी कारण गुरू जी से कई बार डाँट खा चुका था. पिछले दो दिनों से गुरू जी किसी कारणवश विद्यालय नहीं आ रहे थे. मोहन दो दिनों तक तो बच गया,पर आज उसे डाँट पड़ना पक्का था. कक्षा में आते ही सबसे पहले गुरू जी ने मोहन से ही होमवर्क देखने की शुरुआत की. मोहन की कॉपी देखकर गुरू जी का चेहरा गुस्से से लाल हो रहा था और बेचारा मोहन डरा सहमा सा सिर झुकाकर गुरूजी के सामने खड़ा था.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम निचे प्रदर्शित कर रहे हैं.

# संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

मोहन को डरा सहमा सिर झुकाए देखकर गुरुजी ने अपने क्रोध को काबू करते हुए कक्षा के सभी बच्चों का होमवर्क देखा.मोहन को छोड़कर सभी बच्चों ने होमवर्क पूर्ण कर लिया था. अब तक गुरुजी का गुस्सा पूरी तरह शांत हो गया था.गुरुजी ने मन ही मन सोचा कि सभी बच्चों ने अपना गृह कार्य किया है लेकिन मोहन ने नहीं किया जरूर उसे घर में या पढ़ने में कुछ समस्या होगी, उसकी वास्तविकता पता करना चाहिए. गुरुजी ने मोहन के पास जाकर प्यार से पूछा -बेटा! डरो मत सही-सही मुझे बताओ तुम्हें गृह कार्य करने में क्या समस्या होती है?मोहन ने गुरुजी को शांत देखकर कहा-गुरुजी मुझे अक्षर की पहचान तो है लेकिन मात्राओं को समझने में मुझसे बहुत गलतियाँ होती है.मेरे घर में मुझे पढ़ाने वाला कोई नहीं है मेरे माता-पिताजी पढ़े लिखे नहीं हैं दोस्त लोग मेरी हंसी उड़ाते हैं.मैं अपनी समस्या किसको बताऊं समझ में नहीं आता इसी लिए मैं गृह कार्य पूर्ण नहीं कर पाता मुझे क्षमा करें. मोहन की बात सुनकर गुरुजी की आँखें भर आईं. गुरूजी ने मोहन से कहा बेटा-यह बहुत बड़ी समस्या नहीं है पढ़ाई में ध्यान दोगे और बार-बार अभ्यास करोगे तो यह समस्या दूर हो जाएगी.मैं तुम्हें अतिरिक्त कक्षा लेकर मात्राओं का सही उपयोग बताऊँगा.

मोहन गुरुजी की बातों को सुनकर बहुत खुश हुआ. गुरूजी की मदद और अपनी मेहनत के कारण कुछ ही दिनों में मोहन को मात्राओं के सही उपयोग की बात समझ में आ गई. अब मोहन कभी अपना होमवर्क अधूरा नहीं छोड़ता है.

# यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी

शिक्षक के सामने बेबस खड़ा बेचारा मोहन सोच रहा था कि आखिर वह करे तो क्या करे? उसकी मुश्किल को कोई समझने वाला न था. सब उसे डाँटते फटकारते रहते जिससे वह हतोत्साहित हो गया था.

शिक्षक ने डाँटते हुए मोहन से पूछा -तुम्हें होमवर्क करने में क्या परेशानी है मोहन?

मोहन ने उदासी भरी नजरों से गुरुजी की ओर देखा और धीरे से बोला - जब से मेरी माताजी का निधन हुआ है तब से मेरा मन पढ़ाई में नही लगता. अक्सर माँ ही मुझे हिन्दी पढ़ाती थीं, उनके बाद घर पर मुझे कोई पढ़ाई में सहयोग नहीं देता, जिससे मेरी मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं. मोहन की बातें सुनकर शिक्षक की आँखों में आँसू आ गए और उनका गुस्सा कपूर की तरह उड़ गया. शिक्षक ने मोहन की मदद करने की ठान ली.

अगले ही दिन से शिक्षक ने सुबह जल्दी स्कूल आकर मोहन को हिन्दी पढ़ाना शुरू कर दिया. शिक्षक की मदद और अपनी मेहनत से कुछ ही सप्ताह में मोहन की भाषा की गलतियाँ कम होने लगीं. जिससे मोहन का आत्मविश्वास बढ़ा और वह खुश रहने लगा.

# अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

## प्रवीण की परेशानी

आज अर्धवार्षिक परीक्षा का रिज़ल्ट मिला था, शिक्षक ने प्रवीण को बुलाकर उसे बताया कि वह दो विषयों में फेल हो गया है. ऐसा प्रवीण के साथ आज पहली बार हुआ था कि वह किसी विषय में फेल हो जाए. प्रवीण रुआंसा हो गया, उसे परीक्षाओं के पहले पापा की कही बातें याद आ रहीं थी. परीक्षाएँ शुरू होने से पहले पापा ने प्रवीण से पूछा था कि क्या उसने अपनी पूरी तैयारी कर ली है? तब प्रवीण ने थोड़ा झिझकते हुए कहा था कि, हाँ पापा मैं रोज आधा सुबह पढ़ लिया करूँगा और आधा रात के खाने के बाद पढ़ लिया करूँगा. पापा ने उसे समझाया भी था कि बेटा केवल परीक्षा के एक दिन पहले पढ़ लेने से सबकुछ पूरी तरह याद नहीं हो जाता, यदि हर दिन थोड़ा-थोड़ा पढ़ने की आदत बनाओगे तो तुम्हें परीक्षा के पहले सिर्फ एक बार देखने की जरूरत होगी. प्रवीण को पापा की यह बातें सोचकर बहुत पछतावा हो रहा था. वह हर बार ऐसे ही पढ़ता था और अच्छे नंबर से पास हो जाता था. इस बार भी उसने ऐसा ही किया, यह सोचकर कि हर बार की तरह इस बार भी वह अच्छे नंबर से पास हो ही जाएगा. घर वापस जाते समय प्रवीण रोने लगा और यह सोचने लगा कि अब वो अपने मम्मी-पापा को अपना रिजल्ट कैसे बताएगा?

कहानी को इस मोड़ पर छोड़ते हुए हम आपको जिम्मेदारी देते हैं आप इसे पूरा कर हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

# तोता

रचनाकार- आशा पान्डेय

हरा हरा तोता,
पेड़ में उसका खोता,
हरी-हरी मिर्ची खाता,
बड़े मजे से सो जाता.

लाल-लाल उसकी चोंच,
होती है बहुत कठोर,
जब कोई उसे चिढाता,
झट से वह चोंच गड़ाता.

तोता बड़ा ज्ञानी,
मीठी मीठी वाणी,
राम-राम रटता,
मुनिया को भी रटाता.

जब भी कोई घर में आता,
मुनिया को आवाज लगता,
सदा अपना कर्तव्य निभाता,
प्यारा मिठ्ठू है कहलाता.

# गगन की सैर

रचनाकार- डॉ.जयभारती चंद्राकर

भोर का तारा टिमटिमाते देख एक नन्ही सी चिड़िया चहचहाने लगी उसके साथ सभी पक्षी भी चहचहाने लगे. धीरे-धीरे रात्रि का अँधेरा बीत गया और भोर की किरणें चारों ओर फैलने लगी.

आज नव वर्ष का प्रथम दिवस, सूर्य की पहली किरण के अद्भुत सौंदर्य को निहारती नन्ही चिड़िया अपने पंख फैला कर नील गगन में उड़ने का प्रयत्न करने लगी.उसे देख कर उसकी माँ ने कहा- 'नन्ही तुम अभी एक-दो उड़ान और भरो और यह क्रिया बार-बार दोहराती रहो तो तुम जल्दी ही उड़ना सीख जाओगी." नन्ही चिड़िया चहकने लगी और मुस्कुराते हुए कहने लगी- "मैं तो अभी आज से ही नीले आकाश में उड़ना चाहती हूँ." वह अपने पंख फैलाकर उड़ने का प्रयास करने लगी. प्रयास करते हुए वह उड़- उड़कर जमीन पर गिरने लगी. उसकी माँ ने उसे इस तरह उड़ते गिरते देख कर कहा - "तुम आज ही उड़ना क्यों चाहती हो नन्हीं?" नन्हीं ने चहचहाते हुए कहा - "माँ आज नये वर्ष का पहला दिन है और आज से ही मैं उड़कर नीले आकाश को देखना चाहती हूँ."

उसकी बातें सुनकर माँ ने मुस्कुराते हुए कहा -"चलो नन्हीं, आज इस नव वर्ष के प्रथम दिवस पर मैं तुम्हें आकाश की सैर कराती हूँ." ऐसा कहती हुई माँ, नन्ही चिड़िया को अपनी चोंच में दबाकर दूर नील गगन की सैर के लिए उड़ चली.

# नए साल में

रचनाकार- आशा पान्डेय

नए साल में मिलजुल कर,
आओ हम तुम दीप जलाए,
आशा और विश्वास का,
मन में हम तुम आस जगाए.

नए साल----------

बुरे दिनों को भूलकर,
शुभ दिन के सपने संजोए
नए साल की नई सुबह,
अंतस में उजास फैलाए.

नए साल----------

अंधकार रूपी तमस को,
पल भर में हर ले,
देश में खुशहाली हो,
चारों ओर हरियाली हो.

नए साल----------

मन के भेद मिट जाऐ सारे,
सभी हो जाए एक दूजे के प्यारे
गिला शिकवा न रह जाए,
दिलो की खाई है पट जाए.

नए साल--------

देश में आई विपदा मिट जाये
फिर कभी दुजी न आये
प्रभु इतनी कृपा है करना
सबको मंगल मय है रखना

नए साल में मिलजुल कर,
आओ हम तुम दीप जलाए.

# भाखा जनऊला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

## भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

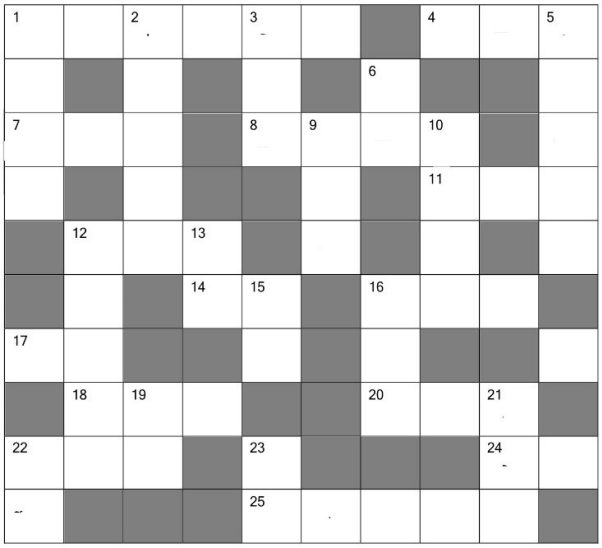

**बाएँ से दाएँ:-** 01. बच्चों द्वारा रेत से घर बनाने का खेल 04. पुरुषों के पगड़ी ऊपर का सृंगार 07. किसी खेत, बाड़ी मे पेड़ इत्यादि का क्रम मे लगा होना 08. नागपंचमी मे नाग देवता का कार्यक्रम 11. पेंड़ की टहनियां जिससे अहाता बनाते हैं 12. खपरैल 14. मोहल्ला, टोला 16. खलिहान 17. नाखून 18. सना हुआ 20. राहल 22. एक भाजी का नाम 24. कील 25. भिंडी

**ऊपर से नीचे:-** 01. छिपकली 02. पूजा सामाग्री, धुप 03. कछुआ 05. चमगादड़ 06. तेज धूप 09. गाय 10. तलुआ, पैर के नीचे भाग 12. खुरदुरा 13. फावड़ा 15. पकाया 16. बंदर 19. बेल, लता 21. सफ़ेद कद्दू 22. नाभि 23. तिखा, ज्यादा मिर्च होना

## पिछले अंक के उत्तर

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 प | र | 2 घ | व | 3 नी | | 4 ग | | 5 बि | 6 ला |
| | | र | | म्गा | | र | | 7 सा | ग |
| 8 ब | र | ति | या | | 9 बि | ज | 10 रा | य | |
| त | | या | | | च्छ | | न्ध | | 11 ग |
| 12 र | द्दा | | 13 स | र | ल | 14 ग | | | रु |
| की | | | र | | | 15 लु | ग | 16 रा | |
| 17 री | ग | 18 बी | ग | | 19 ख | वा | | हे | |
| 1 | | ह | | | | मा | | 20 र | 21 हा |
| 22 न | त | नि | न | | 23 का | य | | | ल |
| वा | | या | | 24 को | ला | | 25 फि | लो | य |

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की सदस्यता जारी रखने हेतु सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

## किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

## किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।